Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Foundation

Gurukul K

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्
पुस्तक-संख्या २२.१/१०
पंजिका-संख्या १६५४८
पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियाँ लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकते। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन डाक्टर लुई कौहनी

साहिब के

सर्व रोगघ्न ४ स्नान

लेखक

CHECKED 1973
Initial

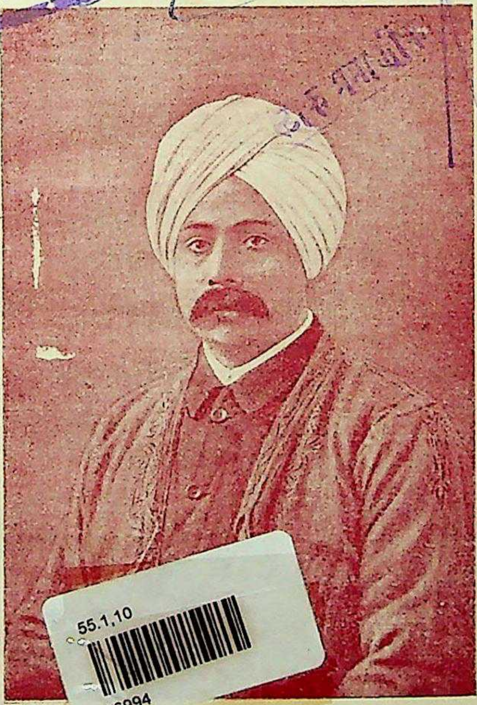

Verification-2004
55.1.10
16994

कविविनोद, वैद्यभूषण,
पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

५५.१/१० १६५५४/६५-२६
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्म्मन डाक्टर लुई कोहनी

साहिब के

सर्व रोगघ्न ४ स्नान

जिस में
उन चारों स्नानों की पूरी विधि बड़ी योग्यता से संक्षिप्त करके लिखने के पश्चात् उन से प्लेग की चिकित्सा कैसे करनी चाहिये इसका भी वर्णन किया गया है

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

जिसको

"अमृतधारा" के आविष्कारक तथा उर्दू, हिन्दी देशोपकारक के सम्पादक और विविध वैद्यक पुस्तकों के रचयिता

पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य कवि विनोद "वैद्यभूषण"

ने लिखा

और

देशोपकारक पुस्तकालय के कार्यकर्ता ने
छपवा कर प्रकाशित किया।

55.1,10
16994

सं० १९२८ ई०

अमृत विद्युत् प्रेस, लाहौर में पं० ईश्वरदास भार्गव के प्रबन्ध से छपा।

द्वितीय वार १००० प्रति] [मूल्य =)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

हमारा विचार है कि विलायत में जो भिन्न २ विधियां चिकित्सा की निकल रही हैं—कोई केवल पानी से चिकित्सा करता है, कोई सूर्य के रंगों से चिकित्सा करता है, कोई केवल वस्ति से जगत् भर के रोग खोता है, कोई चार स्नानों से चिकित्सा कर रहा है, कई मानसिक शक्ति ही को चिकित्सा का मुख्य अंग ठहराते हैं—उन सब को अति संक्षिप्त करके जिसमें उनका सारांश आजावे, अपने भाइयों के ज्ञान वृद्धि तथा विचारार्थ लिखें। यह डाक्टर अपनी विधि की पुष्टि में अपने स्वस्थ किए हुए रोगियों के वृतान्त आदि लिखने में पृष्टों के पृष्ट भर दिया करते हैं। हम सारी पुस्तक को पढ़कर उसका सारांश आपके सन्मुख रख दिया करेंगे। आशा है कि इन से बहुत लाभ होगा। इन चिकित्सा विधियों के विषय में हमारा विचार है, कि यह अपने २ स्थान पर बड़ी उत्तम हैं; परन्तु एक ही खियाल में बह जाना भी उत्तम नहीं है। यथा अवसर इन से काम लेना चाहिये, और जैसा कि इन सब की सम्मति होती है औषधि से डरना नहीं चाहिये प्रत्युत जब २ आवश्यकता हो उसको भी बरतना चाहिये। हां बात २ पर औषधि खाना भी अच्छा नहीं है।

आज यह आप के सामने ४ स्नानों का वर्णन है, जिन के होते डाक्टर लुई कोहनी किसी और चिकित्सा की आवश्यकता नहीं समझते हैं। आशा है सर्व सज्जन यथायोग्य लाभ उठावेंगे। यह वही लेख है, कि जो उर्दू देशोपकारक में हम लिख चुके हैं और जिसको बहुत पसन्द किया गया था।

ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय संस्करण

इस छोटी सी पुस्तक का दूसरा संस्करण भी छप रहा है परन्तु अभी "दैवी-चिकित्सा" की अन्य पुस्तकें लिखी नहीं गईं। केवल मानसिक चिकित्सा पर लिखी गई हैं, समय मिलता है तो और भी अर्पण करता हूं।

द्वितीय अवृत्ति

हर्ष है कि जनता हमारी पुस्तकों से लाभ उठा रही है। दूसरी बार यह पुस्तक छप रही है। शिशु चिकित्सा भी पूरी हो चुकी है। बारी आने पर प्रैस में दी जावेगी। उर्दू में छप चुकी है।

अभागे भारत में कई स्थानों पर $\frac{1}{3}$ बालक प्रथम वर्ष ही मर जाते हैं और जो जीते हैं उनमें से $\frac{2}{3}$ का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता। फिर समझिये कितना आवश्यक है कि इस प्रकार की पुस्तकों का प्रचार हो।

अन्य भी इस पुण्यकार्य में भाग लें।

ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर कुहनी साहिब

के

चार स्नान और प्लेग ॥

डाक्टर लोई कुहनी साहिब जर्मनी के एक डाक्टर हैं। उनका दावा है, कि संसार के सर्व रोग इन चार स्नानों में से एक न एक से जिसको उन्होंने निर्द्धारित किया है, दूर हो जाते हैं। डाक्टर लोई कुहनी की पुस्तक ५० वार से अधिक छप चुकी है, और यह उन के इस आविष्कार की सर्वप्रियता का पर्य्याप्त प्रमाण है। उनकी पुस्तक का नाम "न्यू सायन्स आफ़ हेलिंग" New Science of Healing अर्थात् नव चिकित्सा विद्या है। जर्मनी से अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी से उर्दू में अनुवादित होचुकी है। उर्दू पुस्तक का नाम "नया इल्म शफ़ा बख़शी" है।

डाक्टर साहिब की प्रतिज्ञा

यह है कि रोग संसार में एक है, और विविध रूपों में प्रकट होने के कारण से उस के अनेक नाम हैं। रोग एक ही है अतएव चिकित्सा भी निस्सन्देह एक ही है। और वह प्राकृतिक चिकित्सा ४ स्नान हैं ॥

उक्त डाक्टर सहिब के किञ्चित् शब्दों का आशय नीचे अंकित किया जाता है:—

"अब हम को विचार करना चाहिये, कि शरीर के किन हेतुओं से व्याधि उत्पन्न होती है? जो प्रकृति के विरुद्ध आहार शरीर में पहुंचता है, उस को प्रकृति अपना द्वेषी जान कर वमन विरेचन अथवा अन्य प्रकार से बाहर निकालने का यत्न करती है। सारांश यह है कि ऐसा आहार बल पूर्वक रोका नजावे तो अ श्य निकल जाता है और अपने साथ दूसरे आहार को उस के पाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने से पहिले ही ले जाता है। अन्यथा नियम विरुद्ध अपक्व अंश अन्त्रियों में पहुंचते हैं, और इस दशा में पाचन क्रिया भली भांति नहीं होती। ऐसे आहारांश बहुधा स्वभावतः अपने आप बाहर निकल जाते हैं। और यदि कोई भाग रुधिर में सम्मिलित भी हो जाय, तो वह तुरन्त पृथक् हो जाता है॥

"यहां तक तो कोई हानि नहीं होती। परन्तु दुर्भाग्य से प्राकृतिक नियम का उल्लङ्घन सदैव होता रहता है। और न केवल वारम्बार वरन् दैनिक किया जाता है। जिससे शरीर अपना कर्तव्य पालन करने के अयोग्य हो जाता है। यह अप्राकृतिक अंश पहिले २ आमाशय की नालियों के मार्ग के समीप एकत्र होते हैं, और प्रति दिन इस दूषित पदार्थ की मात्रा बढ़ती जाती है। यहां तक कि वह टूटता है और पृथक् होना आरम्भ होता है अब यदि यह दूषित पदार्थ बाहर न निकले, तो नीचे ऊपर फैलता है। और क्रमशः शरीर के सब अवयवों में प्रविष्ट होने लगता है। बड़ी नाली से और अंगों की ओर जाता है। यहां तक कि शरीर की सीमा पर ही जाकर रुकता है। फिर शरीर उसे त्वचा पर लाने का यत्न करता है। किन्तु उसे कुछ काल तक कृतकार्यता नहीं होती। जब यह अवस्था हो जाती है, तो प्रस्वेदादि निकलना आरम्भ होता है। और यह पहिले शरीर के अन्तिम भाग पर प्रगट होता है, यथा हाथ वा पांव से पसीना निकलता है, और उस से शरीर को सुख मिलता है। यद्यपि इस विषय में लोगों के विविध विचार हैं। पसीना निकलना यद्यपि व्याधिका लक्षण है, किन्तु इसे कृत्रिम उपायों द्वारा रोकने से शारीरिक स्वास्थ्य और भी अधिक बिगड़ जाती है। एकसायटिंग काज़ (Exciting Cause) यथा शीत अधिक लगना, अति श्रम, क्षताघात, या इसी प्रकार के और हेतु उसे उसी मार्ग से पुनः मोड़ ले जाते हैं, जिस से वह आया था। वह संधियों (जोड़ों) पर आकर प्रायः ठहर जाता है। इस प्रकार शरीर में शोथ उत्पन्न हो जाता है, जो जोड़ों के पास होता है, जैसा कि हम सन्धिवातकी दशा में देखते हैं। वह सम्पूर्ण अंग जिन में दूषित पदार्थ ठहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है, अपने कर्तव्यों को भलीभांति पालन नहीं करते। उन में रुधिर का भ्रामण रुक जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि पालन पोषण ठीक नहीं होता। यदि अंगों पर दबाव अधिक पड़ता है, तो वह शीतल हो जाते हैं, और फिर उन्हें उष्ण करना कठिन होजाता है। यह सरदी पहिले हाथ पांव पर और फिर सम्पूर्ण शरीर पर फैल जाती है। और उस के साथ साथ अप्राकृतिक पदार्थ शरीर की आकृतिमें भी परिवर्तन कर देता है। यह एक ऐसी साधारण बात है, कि बहुत से मनुष्य इस परिवर्तन को मालूम नहीं कर सकते। परन्तु बाह्य परिवर्तनों से पता लग सकता है, कि शरीर में कितना अप्राकृतिक पदार्थ सञ्चित है॥

"इसी आधार पर जो ऊपर वर्णन किया गया, ग्रन्थकार ने चेहरे को देख कर सर्व रोग बताने की योग्यता प्राप्त की। क्यों चेहरा और गर्दन में छोटे २ परिवर्तन भी (यद्यपि उन के जानने के लिये बहुत तीव्र बुद्धि चाहिये) देखे जा सकते हैं॥

"यहां स्वास्थ्य परीक्षा पर जो पहले वर्णन की गई ध्यान दिलाया जाता है। जब इससे विदित हो कि स्वास्थ्य प्रकृतावस्था में है, तो जान लेना चाहिये कि आमाशय और सम्पूर्ण शरीर में कोई अप्राकृतिक पदार्थ (मवाद, दोष) सञ्चित नहीं है। क्योंकि सम्पूर्ण शरीर में जाने से पहिले आहार की नाली में ही प्रभाव होता है। यदि परीक्षा से विदित होकि सम्पूर्ण शरीर स्वस्थ नहीं है, तो प्रथम कार्य्य यह होना चाहिये कि हम पता लगावें, कि कितना दूषित पदार्थ शरीर में सञ्चित है।

"किसी समय शरीर पर इतने बड़े २ शोथ होजाते हैं, कि प्रत्येक मनुष्य को दिखाई देते हैं। यथा फोड़े फुन्सियां आदि। यदि हम आन्तरिक शरीर को शुद्ध करने में कृतकार्य हों, तो अपने आप लोप हो जाते हैं, किन्तु यदि कोई कृत्रिम क्रिया शल्यादि की जावे तो उस से शरीर को हानि पहुंचती है। क्योंकि जो अप्राकृतिक पदार्थ (कुपित दोष) एक जगह ठहर गया था वह शरीर के दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागों में भी फैल जाता है। जो शरीर दोषों से भरा हुआ है, वह अवश्य रोगग्रस्त है। समझना चाहिये कि उतना ही अधिक अप्राकृतिक पदार्थ जमा है। दूषित पदार्थ आवश्यक है कि अन्य दूषित पदार्थ उत्पन्न करे। यह बाह्य कारणों पर निर्भर है, कि वह कब बढ़ता है। ऋतु के परिवर्तन से, आहार से, और अन्य ऐसे ही कारणों से बढ़ना आरम्भ होजाता है। यदि शरीर में यह अप्राकृतिक पदार्थ बहुत अधिक हो, तो वह सम्पूर्ण शरीर या शरीर के ऐसे बहुत बड़े भाग में फैल जाता है। यह गरमी उत्पन्न करता है। यह वही गरमी होती है जिस को साधारणतः ज्वर कहा जाता है। अप्राकृतिक पदार्थ सञ्चित होने के दिनों में शरीर इस दूषित पदार्थ को दूर करने के उद्योग में अपनी सम्पूर्ण शक्ति को खर्च कर देता है। अप्राकृतिक पदार्थ को बाहर निकालने के लिये शरीर के उद्योग का नाम ज्वर है। अस्तु प्रत्येक कठिन ज्वर पुनःस्वास्थ्य प्राप्त करने का उद्योग है। सम्पूर्ण Accute (दारुण रोगों) का कारण यही है। इस से परिणाम यह निकाला है, कि ज्वर अपने आप दूर हो जाना चाहिये, जब कि अप्राकृतिक पदार्थ दूर हो जावे। और यही प्राकृतिक चिकित्सा है। यदि यह कृत्रिम उपायों से दबाया जावे तो अप्राकृतिक पदार्थ शरीर में शेष रहता है और शरीर को अधिक हानिकारक रोगों में ग्रस्त कर देता है॥

"प्रिय वाचकवृन्द!" क्या कभी आप को ध्यान आया है कि एक ओर तो आप का एक मित्र कहता है, कि मैं पिछले ज्वर से निवृति पाकर पहिले से भी अधिक स्वस्थ हो गया हूं, और दूसरा कहता है, कि मुझे गत रोगावस्था के पश्चात् से सदैव कोई न कोई कष्ट रहता है। अब आप को इन दोनों परस्पर विरुद्ध अवस्थाओं के समझने में कोई कठिनता न रही होगी, पहिली अवस्था में तो ज्वर को अप्राकृतिक पदार्थ के बाहर निकालने में कृतकार्य्यता हुई है, और दूसरी में वह अकृत कार्य्य रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरमी के बाह्य लक्षणों के कारण इस के विविध नाम पड़ गये हैं। और इसमें वह सब भी रोग सम्मिलित हैं, जो विशेष कर बालकों को अधिक होते हैं। यथा विस्फोटक, शीतला, मसूरिका, मोतीझरा, विशूचिका, मरोड़, टाईफ़ाईड भी इसी प्रकार के रोग हैं ॥

जैसा कि हमने पहिले वर्णन किया; इन सबका हेतु एक ही होता है। और इनका प्रभेद अधिकतर बाह्यावस्थाओं पर और विशेषकर उस दूषित पदार्थ की न्यूनाधिकता पर निर्भर है; जो नालियों में भर जाता है। बलवान् मनुष्यों की अवस्थाओं में प्रायः यह होता है, कि शरीरके केवल थोड़ा सा भाग अप्राकृतिक पदार्थ बाहर निकाल देने पर वह ज्वर से बच जाते हैं। ऐसे मनुष्य अपनी स्वास्थ्य के उत्तम होने का मान किया करतेहैं, क्योंकि उन्हें अप्राकृतिक पदार्थ की वृद्धि से पहिले कोई कष्ट अनुभव नहीं होता। परन्तु अन्त में उनकी अवस्था भी उन रोगियों के सदृश होजाती हैं, जिन का ज्वर औषधियों द्वारा दवाया जाता है। क्रमशः दुखदाई अवस्था आरम्भ होजाती है। यथा शिरःशूल, कास, दन्तशूल, जीवन एक बोझ प्रतीत होता है, और कष्ट दिन प्रति दिन बढ़ता जाता है शरीर के बाजे अंग निर्बल होजाते हैं। केश श्वेत होजाते है, अथवा झड़ जाते हैं। दांत ख़राब होजाते हैं। नेत्र और कर्ण अपने कर्तव्य पालन में त्रुटि करने लगते हैं। अथवा पूर्णतया कार्य त्याग देते हैं। शरीर के वह स्थान जहां अप्राकृतिक पदार्थ अधिक जमा होता है ठंडा होजाता है, और वेदना आरम्भ होजाती है। पाचन शक्ति जाती रहती है। कभी कोष्ठबद्धता रहती है, और कभी रेचन। और अप्राकृतिक पदार्थ के बढ़ने के समय में अन्त्रियों में दाह उत्पन्न होजाता, और आमाशय की झिल्ली रुक्ष होकर कोष्ठबद्धता उत्पन्न करती है ॥

इनके पश्चात् जो २ व्याधियां उत्पन्न होती हैं, उनकी व्याख्या लेखवृद्धि के भय से छोड़ी जाती है। यहां हम फुप्फुस संबंधी साधारण भयानक रोग और उन के कारण लिखते हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फेफड़े दूसरे अंगों की भांति उसी समय रोगग्रस्त होते हैं, जब उन पर सञ्चित दोष का दबाव पड़ता है। और उनका विनाश उस समय आरम्भ होता है, जब शरीर के अन्तिम भाग से पुनः लौट आता है। यह अप्राकृतिक पदार्थ आमाशय की ओर से आरम्भ होकर फुप्फुस की ओर फैलता है, और फुप्फुस के अन्तिम भाग अर्थात् कन्धों के नीचे ठहर जाता है। यहां से आगे नहीं जा सकता, इसलिये फुप्फुस के शिरों पर जमा होकर नाश आरम्भ करता है। इसी का नाम राजयक्ष्म (तपेदिक्) रोग है॥"

इससे आप ने भलीभांति समझ लिया होगा कि, एक अप्राकृतिक पदार्थ के कारण, जिस का नाम दोष आदि चाहे कुछ ही रक्खा जावे प्रत्येक रोग आरम्भ होता है। जहां वह पदार्थ जा बैठता है उसी जगह के रोग आरम्भ हो जाते हैं। इन सब की चिकित्सा डाक्टर साहिब चार प्रकार के स्नानों से करते हैं;—

और अब हम उन स्नानों का वर्णन करते हैं॥

उचित तो यह होता कि इस अध्याय का पूरा अनुवाद यहां किया जाता परन्तु एक अंक में यह समाप्त नहीं होसकता, इस लिये उसका आवश्यक सारांश अंकित करते हैं:—

स्टीम बाथ अर्थात् भाप का स्नान या स्वेदन

यह स्नान अप्राकृतिक पदार्थ को निकालने के लिये विशेष रूप से हितकर है। इस को वैद्यक में स्वेदन विधि कहते हैं। यूनानी में इन्कबाब कहा जाता है। शरीर को बाष्प पहुंचाई जाती है। जिस से सम्पूर्ण शरीर को पसीना आ जाता है। अवस्थानुसार यदि किसी को पसीना की आवश्यकता हो, तो उसी जगह भपारा किया जाता है। इससे अप्राकृतिक पदार्थ निकल जाता है। डाक्टर साहिब स्वास्थ्य स्थिर रखने के लिये भी इसे आवश्यक समझते हैं। यद्यपि वैद्यों और हकीमों की पुस्तकों से ज्ञात होता है, कि सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्राकृतिक पदार्थ निकालने के लिये केवल भपारा पर्याप्त नहीं है। परन्तु यहां इसके निर्णय से प्रयोजन नहीं है। यहां हमें डाक्टर साहब के स्नानों का वर्णन करना है, जो वास्तव में बहुत रोगों पर नितान्त हितकर प्रमाणित होचुके हैं, और प्लेग के लिये भी प्रशंसा प्राप्त करते जाते हैं, और जिनके विषय में डाक्टर साहब का दावा है कि सर्व रोगों को हितकर हैं। स्टीमबाथ (स्वेद कर्म) कई प्रकार से किया जाता है॥

पूर्ण शरीर का स्टीमबाथ (स्वेद स्नान)

इसके लिये डाक्टर साहब ने एक विशेष यन्त्र भी निर्माण किया है, और स्वयम् भी बनवाया जा सकता है। आरामकुर्सी भी यह काम दे सकती है। रोगी को नंगा कर के पृष्ट के बल लेटा

चित्र नं० १

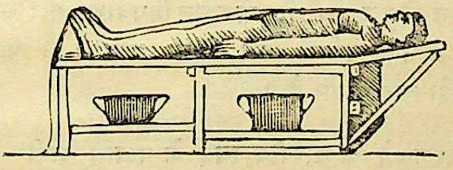

देना चाहिये; जैसाकि चित्र से विदित है। उसके ऊपर एक कम्बल इस प्रकार ओढ़ा देना चाहिये, कि भूमि तक चारों ओर पहुंचे, और बाष्प बाहर न निकले। तीन चार देगचियां लेकर उन्हें पृथक् २ चूल्हों पर रखकर खूब गरम करना चाहिये। जब खूब उबलने लगे तो उठाकर उन्हें आरामकुर्सी अर्थात् रोगी के नीचे रखा देना चाहिये। इनके ऊपर के ढकनों के इतस्ततः करने से बाष्प न्यूनाधिक की जा सकती है। बालक के लिये एक देगची पर्याप्त है और तरुण के वास्ते दो तीन। पहिले पहल मुख को भी कम्बल के नीचे ढक लेना चाहिये। यथाआवश्यक बाहर निकलकर खुली वायु का श्वास लेकर पुनः ढांक लिया जा सकता है। एक देगची अधिक चूल्हे पर रखनी चाहिये। ताकि पहिले देगचियों को बदल सकें, और जितनी देर बाष्प देनी हो दी जा सके। १० मिनट के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर पहिले देगचे से बाष्प निकलनी कम होजाती है। और १०-१५ मिनट के पश्चात् रोगी को उलट जाना चाहिये। आशा है अब शिर से पांव तक एक साथ पसीना आना आरम्भ होगा। जिन्हें पसीना न आता हो, उन्हें शिर ढके रखना चाहिये, कुछ अधिक अहित नहीं है। १५ मिनट से ३० मिनट तक जितनी आवश्यकता हो, पसीना देना चाहियें। यदि बहुत अल्प प्रस्वेद की आवश्यकता हो, तो देगचियां नहीं बदलनी चाहियें। शरीर के उन भागों में जिनमें अप्राकृतिक पदार्थ साञ्चित हो, स्वेद कठिनता से आता है। और रोगी को वहां अधिक बाष्प लेने की अपने आप आवश्यकता होती है॥

यह स्टीमबाथ बहुत निर्बल मनुष्यों को न देना चाहिये, उन्मादी रोगी को भी यह स्नान नहीं देना चाहिये। ऐसे रोगियों को फ्रैकशन सिट्ज़बाथ और फ्रैकशन हिपबाथ, और सनबाथ लेना चाहिये, (जिनका वर्णन अभी किया जावेगा) बाष्पीय स्वेद सप्ताह में दो बार पर्याप्त है॥

स्मरण रहे कि बाष्पीय स्वेद के पश्चात् शरीर को शीतल करने के वास्ते फ्रैकशन हिपबाथ कूप के ताज़े पानी से करना चाहिये, इसमें शरीर का मध्य भाग केवल पेड़ू धोया जाता है। अतः उसके अतिरिक्त छाती, हाथ, टांग, पांव, शिर, गर्दन को बहुत शीघ्र और फुर्ती से इस बाथ के आदि अथवा अन्त में धो लिया जाय तो उत्तम है। डाक्टर साहब कहते हैं, कि भय मत करो, बाष्पीय स्वेदन से उष्ण हुआ शरीर शीतल किये जाने से दृढ़ और परिश्रमी हो जाता है॥

अब जब कि शरीर शीतल होगया, तो हिपबाथ (पेड़ू के धोने के पश्चात्) खुली वायु में या विशेष कर धूप में थोड़ा सा व्यायाम करके उसको उष्ण भी कर लेना चाहिये। यदि रोगी निर्बल है, तो गरम चादर ओढ़ कर पलंग पर जाना पर्याप्त है। परंतु जैसा कि वर्णन हुआ निर्बल रोगियों को स्टीमबाथ कराना ही नहीं चाहिये॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर के विशेष विशेष भागों को स्टीमबाथ—देना हो तो जिस भाग को देना हो, उसके नीचे बाष्प का वर्तन रख कर और उसी को ढांपना चाहिये ॥

चित्र नं० २

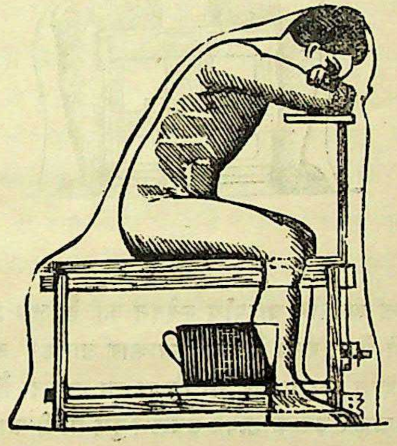

यह आकार डाक्टर कुहनी साहब के स्वनिर्मित यन्त्र का है। इस पर पेड़ू का स्टीमबाथ दिया जा रहा है। परन्तु एक कुर्सी से भी यह काम निकल सकता है। पेड़ू का स्टीमबाथ कठिन उदर रोगों, पाण्डुरोग, गर्भाशय सम्बन्धी रोगों में दिया जाता है। अर्थात् उस समय जब कि अप्राकृतिक पदार्थ उसी जगह हो। जैसा कि सम्पूर्ण शरीर के स्वेदन के पश्चात् हिपबाथ ताज़े पानी का किया जाना लिखा है। उसी प्रकार इस में भी किया जाना चाहिये। सारांश यह है कि पीछे की विधि वही है, जो बताई गई। हां स्त्रियों के रोगों में हिमबाथ के स्थान में फ्रैकशन सिट्ज़बाथ इस स्टीमबाथ के पश्चात् कराना चाहिये ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र नं० २

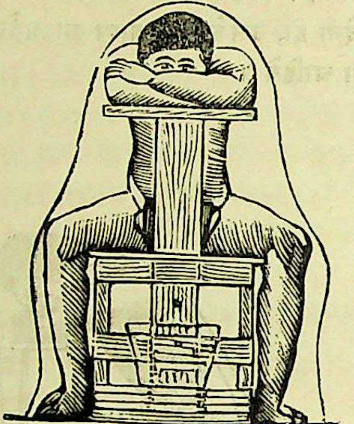

उपर्युक्त आकार वाष्पीय स्वेदन का है, जब कि केवल शिर और ग्रीवा को दिया गया है। यह आकार डाक्टर साहब के अपने यंत्र का है, परन्तु इस प्रकार भी किया जा सकता है, कि बेंच पर एक तख्ता रखकर उसके ऊपर उबलते हुए पानी का बासन रक्खा जाता है, और शिर व ग्रीवा को लपेट कर सहारे के लिये सामने एक साधारण कुर्सी रखकर उस समय तक वाष्प दी जाती है,जब तक कि शिर और ग्रीवा को खूब पसीना आजावे। पसीना आते ही सब प्रकार का दर्द दन्त, शिर, आदि का बन्द होजाता है। इस स्वेद के पश्चात् शिर, छाती, यदि गरम हो, तो तत्काल फ्रैकशन हिप्पबाथ,(पेडू का स्नान) या फ्रैकशन सिटज़बाथ दे देना चाहिये। और यदि कुछ देर पीछे फिर दर्द होने लगे तो वाष्प का बाथ संपूर्ण शरीर को करना चाहिये। सारांश यह कि इसी प्रकार जितने अधिक की आवश्यकता हो भाप दी जा सकती है॥

सनबाथ (Sun Bath) अथात् सूर्य स्नान

का वर्णन किया जाता है। शीत ऋतु में जिस दिन धूप हो, और ग्रीष्मऋतु में जब सहन करने योग्य हो, तो धूप ली जा सकती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। परन्तु उस समय तक कि सुख पूर्वक सहन हो सके। क्योंकि भारत वर्ष की धूप यूरुप के शीतल देशों की अपेक्षा, जिनमें कुहनी साहिब रहते हैं, अधिक उष्ण होती है। अतः इस स्वेदन को करते हुए यह ध्यान रखना चाहिये कि लू न चलती हो, धूपअति कठिन न हो। शीत ऋतु में १० वजे से ३ वजे तक का समय उत्तम है। ग्रीष्म ऋतु में इस से प्रथम। रोगी को चाहिये कि हल्के वस्त्र पहन कर एक चारपाई पर कम्बल बिछाकर और मुख व शिर को केले व निम्ब के पत्तों से ढांप कर लेट जावे, नग्न पेडू को भी इसी प्रकार ढांका जा सकता है। आधा घण्टे से १½ घण्टा तक इस धूप को लेना चाहिये। जिन को धूप में शिरःशूल होने लगता है, उनको पहिले कम धूप लेनी चाहिये। धूप यदि अधिक हो, वा रोगी सहन न कर सकता हो, तो भी कम लेनी चाहिये। धूप लेने के पश्चात् शीतल करने के वास्ते फ्रैकशन हिपबाथ, या फ्रैकशन सिट्ज़बाथ लेना चाहिये। जिन रोगियों की इस सरद पानी में नहानेके पश्चात् शीघ्र शारीरिक उष्मा लौट न आवे, उनको पुनः थोड़ी धूप लगाना, या टहलाना चाहिये। सत्य तो यह है, कि निर्बल रोगियों को बड़ी सावधानी से धूप देनी चाहिये। और भोजन के पश्चात् एकआध घण्टा ठहर कर धूप लेनी चाहिये॥

स्मरण रहे, कि धूप के कारण से अप्राकृतिक पदार्थ जो शरीर में चलायमान होता है, उस से स्वभावतः शिरः शूल, चक्कर श्रम, और गुरुता उत्पन्न होती है॥

शरीर के विशेष २ भागों को धूप से स्नान कराने की आवश्यकता पड़ती है, ऐसे रोगों में जिनमें मांस कहीं शरीर पर उभर आता है। या बहते हुए घावों में, या किसी अंग के कठोर हो जाने पर या रसौली में, या किसी स्थान के मांस बढ़ जाने पर, या शरीर में कहीं पीड़ा होती हो॥

शरीर के किसी विशेष भाग को बाथ देने के वास्ते कोई पृथक विधि नहीं है। इसी प्रकार धूप में लेटा जाता है। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस भाग को सर्वथा नग्न करके उस पर एक पत्ता केले का या थोड़े से पत्ते निस्त्रके रख दिये जाते हैं। डाक्टर साहिब का तजुर्बा है कि हरित पत्तों के भीतर से सूर्य्य की किरणें जो जाकर पहुंचती हैं तो उनका प्रभाव बहुत ही बढिया होता है॥

कहा जा सकता है कि धूप के बाथ में शरीर नग्न रखना और भी उत्तम मालूम होता है परन्तु डाक्टर साहिब इस के विरुद्ध हैं। वह कहते हैं, कि प्रकृति में फल, पत्तों के नीचे ढ़के हुए पहिले धूप पश्चात् जल पाकर पलते हैं। धूप के पश्चात् जल न देना, अथवा नग्न रहना उनको मुरझा देता है। अतएव हलके वस्त्र पहन कर और यदि किसी विशेष भाग को बाथ करना हैं, तो उसे नग्न करके और हरे पत्ते उसपर रख कर उचित समय तक बाथ करके अथवा फ्रैकशन हिपबाथ, या फ्रैकशन सिटज़बाथ, से अवश्य शीतल करना चाहिये। अन्यथा कुछ लाभ नहीं है।

फ्रैकशन हिपबाथ या कटिस्नान

बाष्पीय स्नान के पश्चात् अर्थात् पेड़ू का स्नान जो सूर्य्य स्नान या योंही भी किया जाता है। विधि चित्र से प्रगट होती है। एक टब में इतना पानी डाला

चित्र नं० ४

जावे कि पेड़ू और नाभि डूब जावे, और रान तक पहुंचे। पांव टांगें, और शरीर का ऊपर का भाग पानी से बाहर रहे, क्योंकि इन स्थानों में प्रायः रक्त कम होता है। पानी की उष्णता ६८ से ८४ फ़ैरनहीट होनी चाहिये फ़ैरनहीट थर्मा मेटर (घर्म्म मात्रि) एक यंत्र अंग्रेज़ी दुकानों से मिलता है, जिस से वायु या पानी की उष्णता मालूम की जाती है। ६८ से ८४ तक प्रायः ताज़ा कूप का जल गरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। अस्तु इसी को लेना पर्याप्त है। स्नान करनेवाला कुछ बठ कर और पीछे को सहारा करके बिना ठहरने के शीघ्रता से समस्त पेड़ू को नाभि के नीचे एक ओर से दूसरी ओर तक एक सामान्य मोटे गाले वस्त्र से मले, यहां तक कि शरीर खूब ठंडा हो जाय। बालकों के वास्ते थोड़े मिनट पर्याप्त हैं। रोगियों के वास्ते ५ या १ मिनट और फिर क्रमशः अधिक। नग्न भाग कदापि ठंडे न होने चाहियें। उन्हें कम्बल से अच्छी तरह ढक देना चाहिये। यह भी हो सकता है, कि एक बड़ा कम्बल ऊपर ओढ़ाया जावे। कम्बल शिर से लेकर पांव तक और टब के इतस्ततः भी लटके। पेड़ू के मलने में हाथ न रुके। इस प्रकार शेष संपूर्ण शरीर गरम रहेगा। और फिर वही शरद होगा, जब यह शीतल होगया, तो रोगी को शरीर उष्ण करणार्थ तुरन्त खुले मैदान में व्यायाम कराना चाहिये। और निर्बल रोगियों को कम्बल ओढ़ाकर लेटा देना चाहिये। यदि ऊष्मा क्रमशः आवे तो एक पट्टी पेड़ू के इर्द गिर्द लपेटनी चाहिये। इस प्रकार के हिपबाथ (पेड़ू स्नान) एक बार से ३ बार तक दैनिक दिये जा सकते हैं। इसके स्थान में बाज़ समय फ्रैक्शन सिटज़बाथ भी दिया जाता है, या दोनों। अस्तु फ्रैकशन सिटज़बाथ का वर्णन नीचे किया जाता है।

फ्रैकशन सिट्जबाथ या जननेन्द्रिय स्नान

यह बाथ विशेषकर स्त्रीरोगों में दिया जाता है। इसकी विधि लग भग हिपबाथ जैसी ही है। हिपबाथ में जैसा टब है उस टब में एक काष्ठ का आसन रख देना चाहिये। और फिर उसमें पानी इतना डाला जावे, कि उस काष्ठासन के किनारे तक पहुंचे। परंतु उसका ऊपर का भाग शुष्क रहे। अब इस पर स्त्री इस प्रकार बैठे जावे, जैसा हिपबाथ में बैठा जाता है। फिर एक मोटे वस्त्र व तौलिये को भिगोकर योनि को धोना आरम्भ करे। वस्त्र को बारम्बार भिगोना और धोना चाहिये। योनि के केवल बाह्यओष्ठ धोये जावें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उनको ज़ोर से आगे पीछे को मलना नहीं चाहिये, वरन् नरमी से धीरे २ मलना चाहिये। शेष शरीर शुष्क रहेगा, यदि नितम्ब भीग जावें तो कुछ ऐसी हानि नहीं। मासिक धर्म के दिनों में यह स्नान बंद कर देना चाहिये। हां यदि प्रदर (आर्तव की अधिकता) हो, तो यह बाथ लाभदायक है। तीन चार दिन रज आना स्वास्थ्य का लक्षण है, इससे अधिक व्याधि समझना चाहिये। इस फ्रैकशन सिट्ज़बाथ के वास्ते घड़े का शीतल जल (५० से ६० दर्जा फैरनहीट) पर्याप्त है। और इस स्नान को १० मिनट से ६० मिनट तक रोगी की आयु और शारीरिक बल के अनुसार किया जा सकता है। पानी जितना शीतल हो उत्तम है, परन्तु इतना अधिक भी न हो, कि हाथ सह न सके। बड़े टब में एक स्टूल रखकर भी इसको किया जा सकता है। ऐसा प्रबन्ध होना चाहिये कि स्टूल व बैठक के सिरे तक पानी पहुंचने तक १०-२० सेर पानी टब में अवश्य आ जावे। क्योंकि जितना पानी कम होगा उतना ही शीघ्र उष्ण होजावेगा। और इस लिये लाभ कम होगा॥

फ्रैकशन सिट्ज़बाथ की पुरुषों के लिये भी आज्ञा है। उपस्थेन्द्रिय की ऊपर की खाल को उंगलियों से सुपारी से बाहर तक खींचा जाता है, ताकि सुपारी सर्वथा भीतर ढप जावे और धोते समय उसको कोई रगड़ न आवे। फिर सामान्य रूमाल के बराबर टाट के टुकड़े को गीला करके उंगलियों में पकड़ी हुई खाल को धीरे २ धोता जावे, इस पर उर्दू अनुवादक ने निम्न लिखित नोट लिखा है:—

"इस स्नान के लिये टबके स्थान में एक मिट्टी की नांद (मिट्टी का खुले मुंह का बर्तन) ली जावे, और बैठने के लिये मोढ़ा या चौकी जो कि उंचाई में उसके बराबर हो, उसके साथ मिलाकर रक्खें, और मोढ़े पर पांव लटकाकर बैठकर लिंगेन्द्रिय स्नान किया जाय। एक रोगी की वर्ती हुई नांद दूसरा रोगी न वर्ते। और उसका पानी स्नान के लिये बदला हुआ होना चाहिये। उचित है कि थोड़े घड़े इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य्य के लिये उसके पास रक्खे हुए हों। ताकि ठण्डा पानी जिस समय आवश्यकता हो मिल सके। नांद ऐसी हो कि जिस में २० सेर पानी कम से कम आजाय। क्योंकि इतना पानी २०'३० मिनट तक काम आवेगा। इस पानी को वृक्षादिमें न देना चाहिये, सूख जाता है। प्रश्न उत्पन्न होता है, कि मुसलमान बन्धु जिनका यह चर्म काट दिया जाता है यह बाथ कैसे करें? यह प्रश्न मैंने डाक्टर साहिब को जर्मन में लिखा, तो उन्हों ने उत्तर दिया कि जिनकी खाल कटी हो वह उस स्थान को जो टांगों और अण्डकोश के मध्य में होता है, तौलिये से मलें, और कटि के निचले भाग को टब के भीतर ३ अंगुल नितम्बों के ऊपर तक पानी रखकर उसमें बैठकर तौलिये से मलें। अस्तु केवल ३ उंगल नितम्ब भींगेंगे। शेष शरीर और टांगें शुष्क रहेंगे। पानी जितना शीतल मिल सकता हो उत्तम है। परन्तु ६३ दर्जा फ़ैरन हीट से अधिक शीतल न किया जावे। फ्रैकशन सिट्ज़ बाथ में एक और आवश्यक बात जो डाक्टर साहिब से पूछने पर ज्ञात हुई, वह यह है कि इस बाथके करते समय सम्पूर्ण शरीर से वस्त्र उतार दिये जावें। यह स्नान स्नानागार के भीतर होना चाहिये। विशेषतः शीत ऋतु में या शीत के समय दूसरे ऋतु में भी कमरा बाहर की वायु से गरम रखना चाहिये। जो कि अंगीठी से होसकता है। परन्तु स्मरण रहे, कि कोयलों का विष कमरे के भीतर न फैलने पावे। अंगीठी बाहर दहका कर भीतर लानी चाहिये। और फिर भी कमरे में वायु के गमनागमन का मार्ग रहे। यह चौकसियां हिपबाथ लेने के समय भी करनी आवश्यक है" हिपबाथ और फ्रैकशन सिट्ज़ बाथ के पश्चात् यदि रोगी बलवान् है तो खुले मैदानमें टहले या कोई और व्यायाम २०–३० मिनट तक करे। यदि रोगी निर्बल है तो कम्बल ओढ़कर लेट जावे, या जब तक कि उष्णता पर्याप्त न आवे, परन्तु मुख खुला रक्खे। ऐसे रोगों में जिनमें शरीर का कोई भाग दर्द करता हो, या किसी स्थान में सड़न उत्पन्न होगई हो या रोग जीर्ण और गुप्त हो तो स्नान से वह रोग बहुत शीघ्र नीचे खिच आता है, और उस स्थान पर या उस के समीप प्रगट होता है, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाथ के समय रगड़ा गया था, इसे बुरा न समझना चाहिये। स्नान बराबर करते रहना चाहिये। हां वस्त्र पहिले से नरम वर्तना चाहिये बाजे रोगों में नितम्बों के ३ उंगल ऊपर पानी आना चाहिये। तब पानी की उष्णता ६४ दर्जे से कम और ७३ से अधिक न होनी चाहिये। नितम्ब जब पानी में हों, तो बहुत शीतल पानी हानि करता है। डाक्टर साहिब इस बात का स्वयम् ही उत्तर देते हैं, कि आन्तारिक घावों को बाहर लाने के वास्ते कोई और भाग इस लिये नहीं चुना गया है, कि इसी स्थान पर जीवनरूपी वृक्ष की पूर्ण जड़ है। पट्ठों के सिरे यहां ही हैं। रीढ़ से निकली स्नायु की शाखायें यहीं हैं। यह केवल लिंग ही है जो सम्पूर्ण शरीर पर प्रभाव डाल सकता है। इस जगह को शीतल जलसे धोने से न केवल निकृष्ट आन्तरिक गरमी ही कम होती है। वरन् पट्ठों में भी अधिक स्फूर्ति आती है। मानो सम्पूर्ण शरीर में नूतन बल प्रविष्ट कर दिया गया है। फ्रैक्शन सिट्ज बाथ सब बातों को जो शारीरिक अवयवों के कार्य्य को ठीक करती हैं पूरा करता है। यह बाथ उनके लिये है, जिनकी स्वास्थ्य खराब है। दुखदाई, घृणित शल्य क्रिया की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि सर्व घाव इस से अच्छे होसकते हैं पूरे स्वस्थ्य मनुष्यों पर फ्रैकशन सिट्ज़बाथ का कुछ प्रभाव नहीं होता॥

इस बाथ को वर्णन करके डाक्टर साहिब ने इस फ्रैक्शन हिपबाथ, और फ्रैक्शन सिट्ज़बाथ की प्रशंसा में जो शब्द लिखे हैं और जिनके साथ इस अध्याय की समाप्ति है, हम अक्षर प्रत्यक्षर अंकित करना उचित समझते हैं:—

"यदि शरीर के भीतर प्राकृतिक पदार्थ भरा हुआ है, जिसकी उपमा ज़ङ्गार लगी हुई मैशीन से दी जासकती है, तो बिगड़ी हुई पाचन शक्ति इस योग्य न होगी, किसाधारण अहार से इतना बल पहुंचावे, कि शारीरिक स्वास्थ्य को स्थिर रखने के लिये पर्य्याप्त हो। पहिले की अपेक्षा अधिक आहार की आवश्यकता प्रतीत होने लगती है और दैनिक, विशेषकर उत्तेजक आहार की, ताकि शरीर कामकाजके योग्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे, परन्तु ऐसी दशा में पाचन शक्ति स्वभावतः क्षण प्रतिक्षण अधिक घटती जावेगी ॥

यदि हम फिर शरीर की जीवनी शक्ति को बढ़ाना चाहें, तो ऐसे उपायों के द्वारा बढ़ा सकते हैं, जो पाचन शक्ति को बल देवें। सबसे अच्छे उपाय जो मुझे ज्ञात हैं, वह प्राकृतिक आहार और उसी के साथ ठंडक पहुंचाने वाले यह स्नान हैं। यह बुरी से बुरी पाचनशक्ति को (जब तक वह ठीक होने के योग्य है) किसी दूसरी चिकित्सा से शीघ्र ठीक करते हैं, और प्रकृति के अनुसार प्रभाव करते हैं। इसके अतिरिक्त यह स्नान ज्वर की उष्णता को जो अप्राकृतिक पदार्थों की रगड़ से उत्पन्न हुई है, घटाकर स्वास्थ्य की दशा में लाते हैं। आगामी रोग का बढ़ना रुक जाता है। दैनिक वस्तुओं से एक दृष्टान्त लीजिये। देखिये; यदि हम चाहें, कि उस भाप को जो एक कमरे के भीतर खौलते हुए पानी से निकल रही हो, उसके वास्तविक रूप पानी में लावें, तो उपाय केवल यह होगा कि गर्मी को घटा दें। यही दशा अप्राकृत पदार्थ की है। रोग शरीर में उष्णता बढ़ जाने से उत्पन्न होता है, और यदि विपरीत अवस्था उत्पन्न कर दी जाय तो दूर भी हो सकता है, अर्थात् लगातार शीतलता पहुंचावें और आन्तरिक ऊष्मा, जो उचित सीमा से बहुत बढ़ गई है, घटा देवें ॥

परन्तु ठीक २ जैसे कि एक मैशीन एक ही स्थान से जैसा चाहें धीरे व तेज़ चलाई जा सकती है। वैसी ही दशा मनुष्य के शरीर की है। जीवन शक्ति पर एक ही स्थान से प्रभाव डाला जा सकता है। अर्थात् वह स्थान जो मैंने फ्रैकशन सिट्ज़बाथ के लिये स्वीकार किया है॥

इस कथन के पश्चात् सब को स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जावेगा, कि मैं किस प्रकार से नेत्र रोगों, कर्ण रोगों की इसी विधि से कृतकार्यता पूर्वक चिकित्सा करता हूं। (हां प्रत्येक रोगों की अवस्थानुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार करके) इससे मैं दूसरे रोगों अर्थात् शीतलाज्वर, स्कारलेट, विशूचिका आदि को दूर करता हूं। प्राकृत शक्ति सम्पूर्ण शरीर की बढ़ा दी जाती है, और उसके साथ यह संभव नहीं है कि, शरीर के एक भाग में दूसरे की अपेक्षा अधिक तेज़ी आ जावे, केवल उस दशा के अतिरिक्त जिसका वर्णन ऊपर किया गया है, कि जहां स्नायविक श्रृंखला भंग हो गया हो। प्रायः लोग इस बात को नहीं जानते कि उसकी प्राकृत शक्ति का बढ़ाना किस प्रकार प्रगट होता है, और अनेक समय रोगी की आशा के सर्वथा विरुद्ध प्रगट होता हैं। यथा ऐसी घटना हो सकती है, कि तम्बाकू पीने वाले इस प्रकार के बाथों के पश्चात् तम्बाकू अधिक सेवन नहीं कर सकते, और वह सोचने लगते हैं कि उनके आमाशय निर्बल होगये हैं। यद्यपि इसके विपरीत पहिले उनके आमाशय तम्बाकू के विषाक्त धूम्र का सामना करने के अयोग्य थे। परंतु अब पुनः उनमें यथेष्ट बल आगया, कि उस विष का सामना करें। जब तक पट्ठे इन स्थानों के द्वारा बल प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं, तब तक शरीर में सदैव ऐसी शक्ति आजावेगी, कि प्राकृतिक अंग दूषित पूय को, जो शरीर में सञ्चित होगया है, निकाल देवें ॥

फ्रैकशनसिट्ज़बाथ के अतिरिक्त पेडू के ऊपर मिट्टी (गीली चिकनी मिट्टी व पिंडोल) का लेप बाह्य ऊष्मा को घटाने, और अप्राकृतिक पदार्थ को उखाड़ने के लिये बहुत ही हितकर प्रमाणित होगा। ऐसा बांधना आगन्तुक चोटों और घावों को भी बहुत लाभ देने वाला है ॥

किसी मनुष्य को यह विचार नहीं करना चाहिये, कि यह चिकित्सा विधि (जो कि प्रत्येक मनुष्य की अवस्थानुकूल निर्द्धारित की जाती है) प्रत्येक रोगी को अवश्यमेव पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करेगी, जैसा कि मैं पहिले वर्णन कर चुका हूं, मैं प्रत्येक रोग को अच्छा कर सकता हूं, नाकि प्रत्येक रोगी को। क्योंकि जिस रोगी की प्राकृत शारीरिक शक्ति और जठराग्नि नष्ट हो चुकी है, उसको इस चिकित्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधिसे निस्सन्देह ऐसा लाभ होगा, जो सच मुच किसी दूसरी औषधि से नहीं हो सकता ॥

"कई अवस्थाएँ ऐसी भी कठिन होती हैं, कि जिन में मेरे स्नान बहुत सोच समझ कर लेने चाहियें, और जिनमें प्रायः थोड़े दिनोंके पश्चात् बन्द भी कर देने चाहियें। ऐसी दशाओं में केवल इस लेखके आधारपर, बिना इसके कि मेरी चिकित्सा विधिसे पूर्ण विज्ञता प्राप्त करें, रोगियों की स्वयम् ही चिकित्सा करने लगना अनुचित होगा ऐसी दशाओं में उचित है, कि पत्र व्यवहार द्वारा मुझ से जिज्ञासा करें, जिससे कि कोई बुरा परिणाम इस चिकित्सा विधि से उत्पन्न न हो" ॥

अब आपने भली भांति समझ लिया, कि डाक्टर लुई कुहनी साहिब ४ प्रकार के स्नानों से सर्व रोगों की चिकित्सा करते हैं। वह ४ स्नान यह हैं :—

स्टीमबाथ अर्थात् वाष्पस्नान, सनबाथ अर्थात् सूर्यस्नान, हिपबाथ अर्थात् नितम्बस्नान और सिट्ज़बाथ अर्थात् जननेन्द्रियस्नान ॥

अब उचित् प्रतीत होता है, कि ताऊन की जिस प्रकार इन स्नानों से चिकित्सा की जाती है, उस को लिखा जावे। उर्दू अनुवादक 'नया इल्म शफ़ाबख़्शी' ने एक क्रोड़पत्र दिया है, जिसे हम नीचे अंकित करते हैं :—

डाक्टर लुईकुहनी साहिब की चिकित्सा विधि अनुसार प्लेग (ताऊन) का प्रतिकार

प्लेग अर्थात् ताऊनके विषयमें जितना इस समय तक समाचार पत्रादिके देखने और सुनने से ज्ञात हुआ है, वह यह है कि भारतवर्ष में यह रोग चार प्रकार का हुआ है। एक तो ब्यूबानिक अर्थात् जिस में गिल्टियां बढ़ जाती हैं। द्वितीय न्यूमौनिक अर्थात् जिस में फुप्फुस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक प्रकार का शोथ हो जाता है, और वह पूर्ण रूप से अपना काम नहीं कर सकते। तृतीय सैपटीसमिक जिस में सम्पूर्ण शरीर का रुधिर दूषित हो जाता है। चौथे इन्टिसटाइनल जिस में अन्त्रियां निकृष्ट हो जाती हैं। एक ही रोगी को एक से अधिक प्रकार का ताऊन एक बार होजाना भी सम्भव है। पहिली प्रकार के ताऊन की गिल्टियां या तो ज्वर के प्रथम निकलती हैं, या ज्वर आरम्भ होने के पश्चात्। यदि शरीर के अधोभाग में गिल्टी निकलती है, तो प्रायः जंघा में। और यदि ऊर्द्ध भाग में निकलती है तो कानों के पास, वा उन के नीचे गले में॥

यह रोग मनुष्यों की अपेक्षा, लोग कहते हैं, कि चूहों में शीघ्र व्यापता है। और पहिले चूहे ही मरते हुए देखनेमें आते हैं। फिर इसका प्रभाव मनुष्यों पर होता है। ऐसा तो कोई घर नहीं, कि जहां चूहे न हों, अस्तु चूहों के द्वारा एक घर से दूसरे घर में भली भांति जा सकता है। कई नगरों में जहां कि म्यूनिसिपैलिटी ने इन दुष्ट जीवों की संख्या शीत ऋतु आरम्भ होने से पहिले ही घटा दी है, उन नगरों में फिर यह बहुत कम हुआ। है। जब रोग को एक स्थान से दूसरे स्थान में लेजाने वाले चूहों की संख्या कम होगी तो रोग भी कम फैलेगा। रोग को रोकने के लिये घरों की स्वच्छता भी आवश्यक है। विशेष कर नालियों, चहबच्चों, और पाखानों की अर्थात् उन स्थानों की, कि जहां मल होने का अवसर हो, स्वच्छता अवश्य रखनी चाहिये, और फ़िनायल वाटर से उन्हें धो डालना, या उन में छिड़क देना, और घरों की वायु शुद्ध रखने के लिये उन में सुगन्धी एक बार दैनिक जलाना उचित है। जिन लोगों का दैनिक हवन करना कर्तव्य है, वह गृह में हवन करें, और दूसरे लोग किसी उत्तम वस्तु यथा गुगुल या अन्य सुगन्धी को एक दो बार गृह में दैनिक जलाकर उसका धूम्र लगा दिया करें॥

गृहों की स्वच्छता से शारीरिक स्वच्छता भी कम आवश्यक नहीं है। शरीर को स्वच्छ रखना तो वाह्य स्नान और वस्त्र स्वच्छ रखने से पूर्णतया हो सकता है। परन्तु केवल वाह्य शारीरिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वच्छता से काम नहीं चलता, वरन् आन्तरिक स्वच्छता भी आवश्यक है। इस पुस्तक "नया इल्म शफ़ाबख़्शी" के प्रथम ९९ पृष्ठ पढ़कर आपको ज्ञात होगया होगा, कि बिना आन्तरिक मलीनता के कोई रोग होना सम्भव नहीं, और आन्तरिक मैल से बचने और उसके निवारण करने का उपाय भी प्रथम भाग के शेष पृष्ठों के पढ़ने से ज्ञात होचुका होगा ॥

आन्तरिक व वाह्यिक स्वच्छता से भी अत्यावश्यक आत्मिक शुद्धि है। आत्मिक शुद्धि के विना मनुष्य ऐसे २ कर्मोंका कर्त्ता बनता है, कि जिनसे सब प्रकार की अपवित्रता होती है। आत्मिक शुद्धि के लिये मनुष्य को उचित है, कि अपने जातीय धर्म को पालन करे। रोग मनुष्य के पापाचार का फल है, और जितने अधिक किसी देश के निवासी पापी होंगे उतने ही अधिक कठिन रोगों में ग्रस्त होंगे। क्या यह कहा जा सकता है, कि भारतवर्ष में लोगों का आचार पहिले की अपेक्षा अब अच्छा है? प्रत्येक मनुष्य जब अपने आप को अपने इतस्ततः विचार पूर्वक देखेगा तो यही कहेगा कि नहीं, और उसका कारण यही दिखाई देगा कि साधारणतः प्रत्येकमत के लोग अपने मत-धर्म का पालन नहीं करते। केवल वाह्य कर्मों का ही नहीं वरन् आन्तरिक बुरे भावों का भी स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है, और जीवन को घटाने वाला है ॥

जब किसी घर में यह ताऊन रोग चूहों में प्रगट हो, तो उस गृह को तुरन्त छोड़कर चले जाना चाहिये, और उसकी सफ़ाई पूर्णतया करनी चाहिये। मृतक चूहों को फैंक देने के स्थान में जला देना चाहिये, उन उपायों के अतिरिक्त कि जो फिनायल या रसकपूर आदि को पानी में मिलाकर गृह का प्रत्येक कोना २ और नालियों आदि के धोने के हैं, सबसे सुगम विधि यह है, कि घर में पुराल वा सूखी घास और नीम के शुष्क पत्ते बिछाकर और ऊपले व लकड़ी उसके ऊपर फैलाकर जला दें; जिससे घरमें भली भांति धूआं होजाय, और पूर्णतया गरम होजाय, और घर की संपूर्ण भूमि एक बार अग्निवत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपा देनी चाहिये। क्योंकि जहां तक मनुष्य का अनुभव है कोई भी जीव धारी ऐसा नहीं, जिसको अग्नि भस्म न कर सकती हो ॥

यदि किसी मनुष्य के विषय में संदेह हो, कि वह इस रोग में ग्रस्त है, तो उसे घर के अन्य मनुष्यों से पृथक् रक्खें, और उस की आवश्यकता के समय ही उस के पास जावें। उससे अधिक वार्ता-लाप करना भी उसके विचारों को निर्बल करना है। चित्त को एकाग्र करने के लिये उचित है, कि रोगी अपने सच्चे उपासनीय के ध्यान में प्रवृत हो। रोगी को ऐसे घर में रक्खें, जिस में नवीन वायु का भली भांति प्रवेश हो ॥

चिकित्सा ।

जिस समय किसी मनुष्य के विषय में ताऊन का थोड़ा भी सन्देह हो, चाहे गिल्टी निकल आई हो, या सर्वथा रोग हो, तो सब से प्रथम रोगी को सम्पूर्ण शरीर का एक स्टीम बाथ आधे घण्टे पर्य्यन्त देवें। यदि कोई बेञ्च वा कुरसी प्राप्त न हो, तो छोटी चारपाई पर भी जिसकी बुनावट घनी न हो, यह वाष्पस्नान लिया जासकता है और वाष्पस्नान के पश्चात् तुरन्त एक फ्रैकशन हिपबाथ देर तक देवें। आधा घण्टा या उससे भी अधिक, यदि रोगी को पानी में बैठना बुरा न प्रतीत होता हो। स्टीमबाथ लेने के समय यदि थोड़ी २ देर तक मुख कम्बल के भीतर ढांप रक्खें, और खोलकर श्वास लेवें तो उत्तम है। ऐसा करने से वाष्प का प्रभाव भीतर पहुंचता है। इस बाथ के पश्चात् प्रति ३-३ चार चार घण्टे के पश्चात् फ्रैकशनसिट्ज़ बाथ आध २ घण्टा तक और हिपबाथ कोई २०-३० मिनट तक बारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारी से लेवें। जब तक कि ज्वर दूर न हो जावे। यदि ३ बाथ देने से लाभ प्रतीत हो, तो फिर अगल दिन देवें और ज्वर दूर होने के पश्चात् भी सप्ताह तक दैनिक हिपबाथ तथा फ्रैकशन सिट्ज़बाथ लेते रहें, यदि आवश्यकता प्रतीत होती हो। अथवा पाहेले स्टीम बाथ में पसीना न आया हो तो दूसरे दिन फिर स्टीमबाथ लिया जा सकता है। परन्तु सावधानी के साथ॥

यदि गिल्टी निकल आई हो, तो पूरे शरीर के लिये स्टीम बाथ देने के समय गिल्टी को विशेष कर भली भांति भाप देवें। और यदि गिल्टी कान के पास या गले में है, तो उपर्युक्त चिकित्सा के अतिरिक्त एक दो बार चेहरा व गर्दन को स्टीमबाथ देकर तब फ्रैकशन हिपबाथ वा सिट्ज़बाथ करें। गिल्टी जंघा में है, तो पेडू के स्टीम-बाथज़ पूर्ण शरीर के स्टीम बाथ़ज़ के अतिरिक्त देने उचित होंगे। पूरे स्टीम बाथ के दिन पेडू का स्टीमबाथ पृथक् न दिया जावे। यदि गिल्टी में दाह प्रतीत होता हो, तो उस को बीच २ में उष्ण पानी में ऊनी वस्त्र भिगोकर और निचोड़ कर सेंकते रहें। और शेष समय में उस पर ठण्डे पानी भीगे हुए वस्त्र रख कर ऊपर से किसी ऊनी वस्त्र की पट्टी लपेट देवें (फ़लालैन की पट्टी उत्तम होगी या किसी अन्य ऊनी वस्त्र की) पट्टी ऐसी कठोर न बंधी हुई हो, कि उससे रक्त भ्रमण बन्द होजावे। गद्दी भिगोने के लिये यदि वर्षा का जल हो तो उत्तम है। उससे उतर कर पानी, अर्क़, गङ्गाजल, और गङ्गा जल से उतर कर कूए का अच्छा मीठा पानी उत्तम है। ठण्डे पानी की गद्दी को कभी २ शीतल करते रहें तो उत्तम है। यदि गिल्टी फूट जावे, तो उस गद्दी को दिन में कई बार पूर्णतया बदल देने की आवश्यकता होगी। (उन फाओं या गद्दियों आदि को जिन में कि गिल्टी से निकला हुआ पीव लग गया है जला देना सब से अच्छा है) थोड़े दिनों में इस पानी की गद्दी और फ़लालैन की पट्टी से और अन्य बाथों से ही गिल्टी का घाव और गिल्टी अच्छी हो जावेगी।

आहार —क्षुधा लगने के बिना रोगी को आहार न देवें और जब देवें तो शीघ्र पचने वाला और लघु देवें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब अन्त में उन शब्दों को लिखता हूं, जिन को अनुवादक बाबू कृष्ण स्वरूप साहिब ने मुझे अपने पत्र में लिखा था, और जिन्होंने मुझ को यह बाथ लिखने पर उद्यत कियाः—

"प्लेग के रोगियों के लिये प्रारम्भ में यदि सूचना मिले, तो "अमृतधारा" हितकर पाई गई है। "अमृतधारा" ने अनेक रोगियों को १ से २ घण्टे में स्वस्थ कर दिया परन्तु जब रोग को उत्पन्न हुए कुछ काल होगया, तो मैंने डाक्टर लुईकुहनी की चिकित्सा विधि अनुसार हिपबाथ और स्टीम बाथ दिलवाये। केवल सान्निपातिक दशा एक हिपबाथ से २ घण्टे के भीतर दूर होगई। पश्चात् हिपबाथ वा सिट्ज़बाथ। इस विधि के फल बहुत आश्चर्य जनक हैं"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतधारा की सिल्वर जुबली
१० मार्च १९२६ से १६ मार्च तक बड़े समारोह से मनाई गई थी

इस सिल्वर जुबली का अद्भुत वृत्तान्त जो सज्जन पूरा २ पढ़ना चाहें, एक कार्ड भेज कर बिना मूल्य मंगवा सकते हैं संक्षिप्त तौर पर यहां भी लिख दिया जाता है।

१० मार्च १९२६ को प्रातः काल वेद पाठ तथा हवन हुआ और विद्यार्थियों आदि को खाना खिलाया गया। सायंकाल को प्रदर्शिनी और विद्युत चिकित्सा का उद्घाटन—

श्री राजा नरेन्द्रनाथ जी एम. ए. एम. एल. सी. भूतपूर्व कमिश्नर पंजाब, तथा प्रधान हिन्दु महासभा ने किया। इस उत्सव में सहस्रों की उपस्थिति थी। पहले पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य ने प्रदर्शिनी के लाभ वर्णन किये और बतलाया, कि यह प्रदर्शिनी ७ दिन तक खुली रहेगी। आपने कहा कि विद्युत् चिकित्सा को भी जिसकी मशीनें विलायत से मैं लाया था आज से जारी कर दिया जायगा। इसके पश्चात् डाक्टर नन्दलाल जी बी.ए. एल. एल. डी. बैरिस्टर ने एक संक्षिप्त भाषण में पंडित जी की वैद्यक योग्यता, उन की मानसिक उन्नति, धार्मिक भिज्ञता, उनके आचार और दान शीलता का वर्णन किया और कहा कि उन्होंने कई दर्जन पुस्तकें लिख कर और पत्र जारी करके देश और चिकित्सा की भारी सेवा की है और आज वह हम सब के धन्यवाद के पात्र हैं।

इसके पश्चात् मौलवी महबूब आलम सम्पादक "पैसा अखबार" ने प्रदर्शिनी की चाबी राजा साहिब के अर्पण की। आपने चाबी लेते हुये एक युक्तियुक्त भाषण में बतलाया कि वह समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया, जब कि प्रत्येक विदेशी वस्तु अच्छी समझी जाती थी। हमको स्वदेशी वस्तुओं का सन्मान करना चाहिये। देशी चिकित्सा में बहुत गुण हैं। हां वर्तमान पदार्थविद्या के अनुभवों को अपने भीतर स्थान देना चाहिये। वैद्यक चिकित्सा के साथ विद्युत चिकित्सा की सहायता लेना भारतवर्ष में पहिला उदाहरण है। इसके लिये पंडित जी धन्यवाद के पात्र हैं। इस के पश्चात् आपने प्रदर्शिनी और विद्युत् चिकित्सा विभाग को खोल दिया, और सहस्रों पुरुषों ने देखना आरंभ किया।

यह प्रदर्शिनी बराबर सात दिन तक खुली रही, और सहस्रों की संख्या में जनता प्रतिदिन देखने के लिये आती थी। अमृतधारा भवन बिजली के प्रकाश से खूब जगमगा रहा था। बिजली की अद्भुत पुतलियां और मशीनें जनता को अपनी ओर खैंचती रहती थीं। ४ बजे सायङ्काल से १० बजे रात्रि तक अमृतधारा भवन के सामने एक मेला लगा रहता था, बल्कि किसी समय तो रास्ता भी बंद हो जाता था। प्रत्येक मत और प्रत्येक व्यवसाय के स्त्री पुरुष, बालक वृद्ध लाभ उठा रहे थे। हर एक ने सराहा और पंडित जी के काम की प्रशंसा की।

११ मार्च को प्रातः अनाथों तथा दीनों को भोजन दिया गया। और २ बजे से ४ बजे तक हकीमों और वैद्यों का सम्मेलन हुआ जिस में वैद्य सभा और अञ्जुमन अतिबा के सेक्रेटरियों ने पं० जी के कार्य और उनकी वैद्यक सेवा की प्रशंसा की, और यह निश्चय हुआ, कि इस जुबली के उपलक्ष में वैद्यों और हकीमों की एक सम्मिलित समिति बनाई जावे जिसके प्रधान पं० जी और मंत्री कविराज हरनामदास बी० ए० नियत किए जावें। कान्फ्रेंस के पश्चात् सब वैद्यों तथा हकीमों को एक पार्टी दी गई।

१२ मार्च को ५ बजे से ८ बजे सायंकाल तक जुबली का दिन मनाया गया। लोग चार बजे से एकत्रित होने आरम्भ हो गए थे आठ दस सहस्र स्त्री पुरुष इस उत्सव में सम्मिलित हुए। लोगों का तांता लग रहा था, हर एक पहिले स्थान लेने के लिए उत्सुक था। इस के प्रधान—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनाब मसीहउल मुल्क हकीम मुहम्मद अजमलखां साहिब शाही हकीम देहलवी थे। सब से प्रथम पं० जी ने अपने जीवन के मनोरञ्जक और शिक्षादायक वृत्तान्त सुनाये, जो कि सम्पूर्ण "जुबली वृत्तान्त" में छप गए हैं। इसके पश्चात्—

सर डाक्टर मियां मुहम्मद शफी साहिब एम. ए. के. सी. ऐस. आई. ऐल. ऐल. डी. भूतपूर्व सदस्य शिक्षा विभाग (गवर्नमेंट इंडिया) नेपं० साहिब को धन्यवाद दिया, और कहा कि अमृतधारा अपने गुणों के कारण कामयाब है, और मेरे यहां ऐसा कोई समय नहीं होता जब कि दो चार शीशियां मौजूद न रहती हों।

सर खान बहादुर शेख अब्दुल कादिर साहिब बैरिस्टर भूतपूर्व वज़ीर पंजाब ने फरमाया, कि पं० साहिब ने साबित कर दिया है, कि देशी ओषधियां विदेशी औषधियों को मात भी कर सकती हैं। महाशय कृष्ण बी०ए० सम्पादक "प्रताप" ने कहा कि पं० जी की उन्नति उनके शुभ गुणों के कारण से है। आप जहां कमाते हैं देते भी हैं। आपने अपने पुत्र के विवाह पर एक बार ही ४० हजार रुपया दान कर दिया था—उपदेशक विद्यालय को आजकल आप ४००) मासिक दे रहे हैं। और कोई भी किसी शुभ कार्य के लिए उन के पास जाय, खाली हाथ नहीं जाता है।

डाक्टर गोकुलचन्दजी नारंग, एम.ए. मैम्बर पंजाब कौंसल ने कहा कि परमात्मा की दी हुई योग्यता के साथ धैर्य और संगठन शक्ति भी हो तब ही सिद्धि प्राप्त हो सकती है। यह सब बातें पं० जी में मौजूद है। आप उन लाभकारी प्राणियों में से हैं, जिन की मेघ, नदी अथवा वृक्षों से उपमा दी जा सकती है।

मौलवी गुलाम मुहीउद्दीन साहिब वकील कसूरी ने आप के कार्य की प्रशंसा करते हुए फरमाया, कि इस के उपलक्ष में पं० साहिब को कोई ऐसा उपाय सोचना चाहिए, कि अनाथों को वैद्यक सहायता प्राप्त हो सके।

सरदार सरदूल सिंह कवीश्वर ने वर्णन किया, कि विजयी सदा पराजित जातियों की विद्या तथा शिल्पका सम्मान नहीं करते,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० साहिब धन्यवाद के पात्र हैं, कि जिन्होंने देशी चिकित्सा का सम्मान बढ़ाकर मुकाबिला किया।

लाला दुनीचन्द साहिब बैरिस्टर ने घोषणा की कि मौलवी गुलाम मुहीउद्दीन साहिब की अपील से पंडित जी ने मुझे यह सूचना देने को कहा है, कि वह २० हजार रुपया दीनों तथा असहायों की वैद्यक सहायता के लिए जुदा करते हैं।

उत्सव के प्रधान जनाब मसीहुलमुल्क साहब ने जनता को धन्यवाद दिया और कहा, कि वह पंडित जी को १७, १८ वर्षों से जानते हैं, वह सचमुच परिश्रम धैर्य्य और सत्यता से कार्य्य करने वाले हैं। यदि ऐसे सब लोग मिलकर देश के लिये काम करें, तो स्वराज्य क्यों प्राप्त न हो। हिन्दू मुसलमान जैसे आज एकत्रित हुये हैं, उनको सदा मिलना चाहिये। हिन्दू मुसलिम झगड़ों से देश को बहुत हानि पहुंच रही है। उत्सव के पश्चात् तालियां और "अमृतधारा की जय" के शब्दों से पिंडाल गूंज रहा था * ।

एक अद्वितीय विज्ञापन।

अमृतधारा के सहस्रों ऐसे विज्ञापन तैयार हो सकते हैं, जिन में एक शब्द भी अपनी ओर से न मिलाना पड़े और एक पूरा विज्ञापन बन जावे, (क्योंकि ३३ हजार पुरुषों के प्रशंसा-पत्र मौजूद हैं)। नीचे हम ने कुछ पत्रों के थोड़े२ शब्द छांट कर दरज कर दिये हैं। जिन महाशयों के ये शब्द हैं, उन के नाम कोष्टों में साथ २ बारीक छाप दिये हैं। आरम्भ से अन्त तक पढ़ जाइए आप को अमृतधारा का वर्णन मिल जायगा, और हमारा इस में एक भी शब्द नहीं।

आप की आविष्कृत अमृतधारा की किस जिह्वा से श्लाघा करूं, यह एक अद्वितीय औषधि है इस ने वह २ चमत्कार दिखलाये हैं,

* विस्तृत विवरण जो कि बड़े मनोरञ्जक हैं। "रिपोर्ट सिल्वर जुबली" में देखिये जो कि मुफ्त मिल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो किसी दूसरी दवाई से असम्भव थे । (मियां शेर मुहम्मद चक नं० ४५ पत्तोकी) इस में किंचित मात्र अत्युक्ति नहीं, कि अमृतधारा 'यथा नाम तथा गुण' है। निश्चितरूप में यह आवेहयात (अमृत) है, और जगत में कोई इस प्रकार की अद्भुत औषधि आज तक निर्माण नहीं हुई है। सचमुच भारतीय चिकित्सा पद्धति का एक चमत्कार है, भारतवासियों को इस बड़े आविष्कार का अभिमान करना चाहिये (राजा नरेन्द्र चन्द्र बहादुर सी. एस. आई. आफ नादौन) मैं प्रसन्न हूं कि आप ने इस दवाई को ईजाद करके जगत का बड़ा उपकार किया है (बा० त्रिवेनी सहाय डिपटी कलैक्टर आगरा) और सब मनुष्यों को इस उत्तम आविष्कार से अपना ऋणी बना लिया है (पं० दीनदयालु शर्मा व्याख्यान वाचस्पति) सब को जनता के उपकारार्थ किए गए पुरुषार्थ के लिए आप का कृतज्ञ होना चाहिये (टिक्का बलदेव सिंह गुलेर रियासत) निश्चय ही अमृतधारा सब रोगों पर जादू का प्रभाव रखती है, और जितनी भी इस की प्रशंसा की जावे थोड़ी है (कुंवर प्रदुम्न सिंह बहादुर वजीर रियासत बीजा) अमृतधारा में खुदा ने बड़ा प्रभाव दिया है, इस दवाई की कहां तक प्रशंसा करें (शेख महम्मद अयूब एण्ड सन्ज़ जनरल मरचेण्ट सहारनपुर) क्योंकि यह जादू भरी दवाई है, और कई कठिन रोगों के रोगी अजीब तौर से इस से राजी हुए हैं (मिस्टर टी ब्रेडशा लालबाग लखनऊ) वस्तुतः इस की पूर्ण प्रशंसा होही नहीं सकती है, कोई दूसरी दवाई इस की तुलना नहीं कर सकती, बल्कि पास ठहर नहीं सकती (मैडम ई० जानसन साहिबा चुनार) मैं नहीं कह सकता कि संसार में कोई और दवाई भी इतनी शीघ्र प्रभावशाली और निश्चय तौर पर लाभदायक होसकती है (लाला मोहनलाल मतलब क्लर्क आफ कोर्ट सिशन जज लाहौर) निःसन्देह यह बहुत उपयोगी दवाई है (श्री स्वामी सत्यानन्द जी राजोपदेशक) यह एक सच्चाई है कि अमृतधारा अक्सीरे-आजम है (हकीम फिरोजदीन मुन्शी फाजिल लाहौर) सच कहता हूं, कि अमृतधारा में आवेहयात से कहीं बढ़ कर गुण हैं, तीर व तलवार का वार खाली जा सकता है, मगर अमृतधारा का रोग पर वार खाली नहीं जा सकता है, यह अपने गुणों के कारण सब जगत में प्रसिद्ध होरही है (बाबू पी. एन. जी मालिक नैशनल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लास वर्कस नगीना) मैंने तो जो रोगी आया उस को अमृतधारा दे दी, और सब ही राजी होकर खुशी से हंसते हुए वापस हुए (लाला राजाराम सबडिवीज़नल आफीसर अकलेरा) रोग नया हो या पुराना, कोई भी हो, अमृतधारा दे दो, यह आराम दे देगी (मिस्टर एन. आर. आरिस्टर बदायूं) मेरा पहले ख्याल था, कि एक दवाई इतने रोगों को कैसे उपयोगी होसकती है, परन्तु जब से यह अमृतधारा इस्तेमाल करना शुरू किया है, मुझे इस बात का पूरा विश्वास हो गया है (ला० नरायनदास इञ्जीनियर) अमृतधारा में बहुत से गुण हैं, इस की पूरी प्रशंसा करनी तो असम्भव है, इस से वैद्यों और डाक्टरों की आवश्यकता नहीं रहती (शेख मुहम्मद जहूर-उल हक भदक) बहुत से औषधियों के बक्स खरीदने की आवश्यकता ही क्या है, जब कि अकेली अमृतधारा इतने रोगों को दूर कर सकती है (राय दीवानचन्द एम. ए. सेशन जज) बड़े परिवार वाले घर में सैकड़ों औषधियां रखने की बजाय अमृतधारा को मौजूद रखना काफी है (मियां मुहम्मद अली रईस करञ्जा जि० अकोला) हर घर में चन्द शीशियां अमृतधारा ज़रूर रखनी चाहिए, अगर कोई घर खाली रहे तो वह अभागा है (मुहम्मद खुरशीदद्दीन फारूकी) अमृतधारा सचमुच अमृत की तरह गुणकारी है, इस की जितनी तारीफ कीजाय थोड़ी है, गत तीन वर्षों से मैं जङ्गल में हूं, और मेरी अकेली और सच्ची मददगार केवल अमृतधारा है (राय बहादुर ठाकुर किशन सिंह झील टोला) इसने परदेश में भरोसा और आश्वासन देने में माता पिता का सा काम किया है । मैं इस की दिलोजान से उन्नति चाहता हूं (राव चरणदास अल्मोड़ा) ऐसी प्रभावशाली और उत्तम औषधि की एक शीशी प्रत्येक मनुष्य को अपने पास रखनी चाहिये (मिस्टर जे लूई साहब गवर्नमेण्ट रेलवे आफिस लाहौर) प्रत्येक अमीर ग़रीब के घर में इस दवाई को रखना चाहिये अमीरों को चाहिये कि वह अधिक मंगवा कर ग़रीबों को मुफ्त बांटें (सरदार देवेन्द्र सिंह रईस पट्टी) मेरे पास पूरे शब्द नहीं कि मैं हर एक मनुष्य को विश्वास दिला सकूं, कि अमृतधारा प्रत्येक स्त्री पुरुष को अपने पास रखनी आवश्यक है (लाला हरसुखराय मैनेजर पञ्जाब नेशनल बैङ्क लाहौर) अमृतधारा दोषों से बिलकुल खाली है, और इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अधिक प्रशंसा की असल तौर पर हकदार है जो अब तक भिन्न भिन्न प्रान्तों के लोगों ने की है। सचमुच अपने लाभ के ख्याल से यह आप अपनी मिसाल है (हकीम नासरुद्दीन अहमद खां सुपुत्र शफा-उल मलक देहली) अगर सब विज्ञापन देने वाले हकीम आप की अमृतधारा जैसी उपयोगी दवाइयों के विज्ञापन देने लग जावें तो लोगों का विश्वास विज्ञापनों में होजावे, (सरदार मजीब उर्रहमान आनरेरी मजिस्ट्रेट मजीब नगर) अमृतधारा यकीनी तौर पर अमृत सरोवर है, और इस के गुणों के खयाल से इस का मूल्य २॥) कुछ भी नहीं है, (बाबू जगन्नाथ प्रसाद भानुकवि ई० ए० सी० बिलासपुर) मेरा तो ख्याल है, कि अमृतधारा के प्रत्येक बिन्दु का मूल्य इस की नमूना का शीशी के मूल्य ॥) से अधिक है (मियां मुहम्मद यासीनखां मुन्सिफ सराय भनौली) ईश्वर से प्रार्थना है कि इस का प्रचार घर घर होजावे ताकि लोग कष्ट से बच सकें, प्रभु आप के कार्यालय को दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति दे और सदा आप का नाम चांद की तरह रौशन रहे (ठाकुर वीरसिंह हाजर वाशी मुसाहिब महाराजा साहब बहादुर जम्मू) जो लोग अमृतधारा जैसी औषधि तैयार करने के दावे करते हैं वह असल में जनता का धोखा देना चाहते हैं मगर वह इस में कृतकार्य न हो सकेंगे। प्रत्येक पुरुष जानता है कि वह आप की अपनी आविष्कार है, और किसी पुस्तक में इसका प्रयोग नहीं मिल सकता है, मैं अपना कर्तव्य समझता हूं कि आप की औषधियां विशेष कर अमृतधारा की प्रसिद्धि करूं। मैं जनता के उपकार के लिये ही अपने मित्रों को यह विश्वास दिलाने का सदा यत्न करूंगा, कि अमृतधारा की नकलें किसी काम की नहीं हैं, और इन को नक्कालों के फन्दे में न फंसना चाहिये (पं० श्रीधर कौल बी० ए० श्रीनगर) मैंने सुपरिण्टेण्डेण्ट बहादुर की मेम को जब कि वह पेट दर्द से तड़प रही थी, और सिवल सर्जन इलाज कर चुका था, अमृतधारा दी, और पन्द्रह मिनट में बिलकुल आराम हुआ। मेम साहिबा ने मुझे दस रुपया इनाम दिये, और पूछा कि यह दवाई कहां से मिलती है ? मैंने प्रार्थना की, लाहौर में जनाब पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य की यह दवाई है (अज़ीज़खां गनूज मुल्क बरार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन रोगों के नाम जिन को अमृतधारा दूर करती है ।

सब प्रकार का शिर दर्द, श्वास, कास, पार्श्वशूल, (निमोनिया) नजला, जुकाम, विषूचिका, मन्दाग्नि, अरुचि, उदर रोग, गुड़गुड़ाहट, मरोड़, परिणामशूल, अतिसार, वमन, मृगी, दन्तपीड़ा वा दाढ़पीड़ा, दांतों से रक्त जाना वा पानी लगना, कर्ण पीड़ा, कर्ण घाव, कर्ण खाज, छींक, नेत्र पीड़ा, फोड़ा, फुंसी, सब प्रकार के घाव, दाद, चम्बल, भिड़, बिच्छू, सर्प का डंक, बावले कुत्ते का विष, गले में दर्द, गला बैठना, मुखशोथ, सर्व प्रकार के ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, सन्निपात, उपदंश, गिलटियां, सन्धिवात, सर्व प्रकार का शोथ, आन्तरिक व बाह्य पीड़ायें, चोट से दर्द, बवासीर, प्लेग, रक्त वमन, प्रसूत, हृदय रोग, कामला, वायु गोला, आर्तव सम्बन्धी सर्व रोग, कण्ठमाला, गुदभ्रंश, डब्बा रोग, बच्चों का दूध न पीना, कम्परोग, लकवा, अर्द्धांगवात, घ्राण नाश, नकसीर, जिह्वा शोथ, मुख में फुंसियां, मुख का पकना, ओष्ठ शोथ, ओष्ठ फुंसी, दन्तकृमि, मसूढ़ शोथ, गले पड़ना, स्वर-भङ्ग, स्तन शोथ, स्तन फोड़ा, आमवात, मतली, यकृत पीड़ा, जलोदर, पाण्डुरोग, आमातिसार, उदर कृमि, भगन्दर, वृकद्वय पीड़ा, मूत्राशय पीड़ा, कटिपीड़ा, घुटने का दर्द, पिण्डली का फूलना, नासूर, सर्व प्रकार की खाज, छपाकी, बहुस्वेद, अग्नि से जलना, इत्यादि इत्यादि दूर होते हैं, पशु पक्षियों के सब रोग भी दूर करती है ।

पत्र व्यवहार व तार का पता—**अमृतधारा लाहौर ।**

दफ्तर का पता—मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा भवन अमृतधारा रोड, अमृतधारा पोस्ट आफिस लाहौर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगत पत्र ।

अब हम अमृतधारा की प्रशंसा में आये ३३ हजार पत्रों में से कुछ पत्र नीचे दरज करते हैं, और पाठकों से प्रार्थना करते हैं, कि वह अवश्य इनको पढ़ें, और ऐसे आविष्कार की दाद दें। अधिक प्रशंसा पत्र देखने हों, तो "अमृत" पुस्तक मुफ्त मंगवायें। इन प्रशंसा पत्रों से मालूम हो जायगा, कि अमृतधारा न केवल मनुष्यों के प्रायः सब रोगों का हुक्मी इलाज है, बल्कि पशु पक्षी आदि के रोगों को भी हितकर है। कठिन रोग जैसे प्लेग, इनफ्लुएंज़ा नमोनिया, क्षय, सांपका विष, विषमज्वर, विशूचिका, हिस्टिरिया, शूल, उपदंश, गंठिया, गौट और कई अज्ञात रोगों में भी अद्वितीय प्रमाणित हुई है। साधारण रोगों की तो क्या बात है। अकस्मात् होने वाली घटनाओं तथा रोगों जैसे चोट से रक्त जाना, आग या गरम पानी या तेजाब आदि से किसी भाग का दग्ध होजाना, सांप, बिच्छू, भिड़, मच्छर, बावला कुत्ता आदि का काट खाना, शिर पीड़ा, कर्ण पीड़ा, दरद गुरदा, आमाशय का दरद, दन्त पीड़ा, वमन, विशूचिका, अतिसार, मरोड़, पीनस, नजला, लू लगना, मूर्छा, किसी विषैली वस्तु का खाया जाना आदि, को अचानक ही खाने अथवा लगाने से दूर करती है। तीव्र कीटाणु नाशक है और छूतदार रोगों से बचने के लिये इसका आंतरिक वा बाह्यिक प्रयोग अत्यन्त सन्तोष जनक है। पुराने रोगों में भी यह जादू का प्रभाव रखती है। यात्रा में इससे बढ़कर कोई सहायक नहीं है। इस का योग दोष रहित है, यदि किसी रोगीको किसी कारणवश लाभ न करेगी, तो हानिभी न पहुंचायेगी। इसकी इतनी प्रसिद्धि देखकर लोग नकलें भी करने लग गये हैं। पाठकों को सावधान रहना चाहिये। धनी, निर्धन राजे महाराजे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, ब्रह्मो, सिख, आर्य, देव समाजी, राधा स्वामी, देशी, विदेशी, सब इसकी प्रशंसा करते हैं, और सब की यह सम्मति है, कि यह बहुत कष्ट, चिन्ता, और व्यय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बचाती है। इस लिये इसको प्रत्येक मनुष्य को सदा पास रखना चाहिये। नीचे लिखे थोड़े से प्रशंसा पत्र अवश्य पढ़िये।

मखौल उड़ाया करता था

ला० नारायण दास साहिब चड्ढा बी० ए०, सी० आई० ई० लिखते हैं:—"लगभग दो वर्ष हुए होंगे कि मुझे पहिले ही पहल आपकी निर्मित अमृतधारा सेवन करने का अवसर मिला, इस २ साल के अर्से में "अमृतधारा" की शीशी हमेशा मेरे पास मौजूद रहती रही, मैं पहिले समाचारपत्रों में इश्तिहारी औषधियों पर जो दुनियां भर के सर्व रोगों को दूर करने का दावा रखती हैं, मखौल उड़ाया करता था, परन्तु अमृतधारा का जो थोड़ा बहुत तजरुबा मैंने किया है, उससे यह प्रमाणित हुआ है कि एक ही दवाई एक से अधिक विभिन्न रोगों पर हितकर हो सकती है। आप इसको खूब ज़ोर से प्रकाशित करें, ताकि लोगों को जितना अब लाभ पहुंचा है, उससे भी अधिक पहुंचे"।

बाबू चन्द्रप्रकाश साहिब रियासत साहनपुर जिला बिजनौर से लिखते हैं:—"आजकल जहां कहीं गिलटी या दर्द मालूम हुई प्लेगका भ्रम होजाता है। अबतक ऐसे रोगियों पर बरती, बड़ा फायदा हुआ। "अमृतधारा" में विशेष गुण है कि गर्दन के पास गिलटी हो, या रान के जोड़ में, बद्ध हो या चोट, या दूसरी कोई फुन्सी प्लेग की आकृति वाली हो, सब में विचित्र लाभ देती है। किसी अवस्था में निदान की बड़ी आवश्यकता नहीं हुई। ऐसा प्रभाव दुनियां की और किसी दवा विशेषतः इश्तिहारी दवा में आज तक नहीं देखागया। सत्य यह है, कि यह सब औषधियों की शाहनशाह और यथा नाम तथा गुण है"।

रोग का पता न था

मीर उसमान अलीहुसैन सजादह नशीन मौजा नसुरलाबाद लिखते हैं:—"सचमुच अमृतधारा हर रोग का हुक्मी इलाज है। आधासीसी, दर्द सिर, आंख, गठिया, बद्ध, सोजाक, खांसी, सब प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाह्लिक व आन्तरिक रोगों पर मैंने आज़माया जादू का प्रभाव पाया। इसके अतिरिक्त मेरी नाक में मांस बढ़ गया, जिससे सांस रुककर बड़ा कष्ट रहता था, रूई के फाया से लगाया, ईश्वर की कृपा से बहुत सा मांस गल गया।

हकीम बन गया हूं

जनाब अमजदअली साहिब ज़िलादार गढ़ार ज़िला मिरज़ापुर लिखते हैं:—मेरे पास अमृतधारा हमेशा मौजूद रहती है, चूंकि मेरा अधिकतर निवास ग्रामों में होता है, इस लिये सैंकड़ों रोगी मेरे पास बिच्छू के काटे हुये आये, जिनकी आंखों से बराबर आंसू जारी थे, मगर जिस समय मैंने अमृतधारा लगाया, शीघ्र आराम हुआ और हंसते हुये वापस गये। इसके अतिरिक्त शिर दर्द के जो रोगी मेरे पास आये उनको बराबर आराम हुआ। मलेरिया बुखार के अकसर रोगी मेरे पास आये, पानी में डालकर २ बूंद अमृतधारा दिया, आराम होगया। जितनी प्रशंसा अमृतधारा की कीजावे, वह थोड़ी है, कोई हकीम नहीं हूं, मगर जब से आपके कारखाने से अमृतधारा मंगाई है, ग्रामों में लोगों ने मुझ को हकीम मशहूर कर दिया है"।

कोई घर खाली न रहना चाहिये

श्रीमान् अमृतलाल साहिब सुपरिन्टेन्डेण्ट पुलिस सिटी मजिस्ट्रेट व जज अदालत खफीफा राज्य उदयपुर मेवाड़ लिखते हैं कि:—"मैं अपने दो साल के तजुर्बे के बाद पबलिक को इस बात का निश्चय दिलाता हूं कि "अमृतधारा" में वे सब लाभ निःसंदेह वर्तमान हैं जिन को कि देशोपकारक पंडित जी ने अपने विज्ञापन में प्रकाशित किया है, सचमुच कोई गृहस्थ और बाल बच्चों वाला घर ऐसा नहीं होना चाहिये, कि जिस में "अमृतधारा" हर समय मौजूद न रहे। समय पर यह सब प्रकार के रोगों से रक्षा करती है। यदि मैं अपने तजुर्बों को प्रकट करूं तो एक भारी ग्रन्थ होजाय। इसलिये इतना पर्याप्त है, कि हमको इस विश्वास के साथ एक शीशी "अमृतधारा" की अपने घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मौजूद रखनी चाहिये, कि मानो एक चतुर वैद्य और डाक्टर घर में मौजूद है।

मेरे पास एक तोता छोटी किस्म का है।

"उस के दाएं पंख में एक प्रकार की खाज थी, उस के कारण से उसने अपने सारे बाल नोच दिये। 'अमृतधारा' लगाने से बाल नोचना बन्द हो गया अब उसके पंख जम रहे हैं, और अच्छी अवस्था में आ रहा है, आशा है कि किंचित् दिनों के लगाने से पूर्णतया अच्छा हो जावेगा और पंखादि उग आवेंगे"।

एक कुत्ते ने दो रोज कुछ न खाया था।

"बड़ी चिन्ता थी कि इसको क्या दिया जावे, निदान मन में आई कि 'अमृतधारा' देनी चाहिये अतः शक्कर में मिलाकर जबरदस्ती उसके मुख में डाली गई, एक घंटा पीछे थोड़े चावल और रोटी का टुकड़ा दिया तो थोड़ा सा खाया, दूसरी बार 'अमृतधारा' देने से राजी हो गया, फिर अब तक बीमार नहीं हुआ, मेरी ६ शीशियां ६ मास में समाप्त हुई हैं। १२ शीशियों का आर्डर अब दिया है। काश ! कि 'अमृतधारा' का मूल्य अल्प होता। जिससे दिल खोल कर पशुओं की सहायता की जाती, आशा है इस लेख को आप देशोपकारक में सर्व साधारण के लाभार्थ प्रकाशित कर देंगे।

लेखक—राधाकिशनसिंह इन्सपेक्टर कन्टोन्मेन्ट सरवे सेकशन नं० २ सरवे आफ इण्डिया मकान नं० ५ रसूलपुर छावनी

अन्य प्रदेशों में

श्रीमान् महाशय शिवव्रतलाल साहिब एम. ए. सम्पादक "साधू मार्त्तण्डादि" लिखते हैं:—श्रीमान् पण्डित जी ! आपका पत्र मिला, अमृतधारा के विषय में मेरी सम्मति चाहते हैं, मैं तो यों ही उसको प्रभावशाली मानता हूं, इस कारण से नहीं कि आपके पास १५ सहस्र प्रशंसापत्र वर्तमान हैं, वरन् इस कारण से कि मैंने तजरुबे से इसको बहुत गुणकारी पाया है, मैं इसकी शीशी सदैव चीन, आसाम, अमेरिका आदिकी यात्रा में साथ रखता था, और जहां कहीं सम्भव हुआ, मित्रों और मिलने वालों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके मंगाने की सम्मति दी। जापान और सानफ्रांसिस्को में मैंने अपने मैनेजर कन्हैयालाल साहिब से अमृतधारा की शीशियां मंगाकर लोगों में बांटीं, मेरे विचार में जहां वैद्य और डाक्टर न हों, वहां अमृतधारा का पास रखना अत्यन्त हितकर है इससे अधिक मैं और क्या सम्मति दूं"।

एक शरीफ हाजन बेगम का पत्र

"आलीजनाब! बन्दगी, अर्ज़ है, अगर इस मौका पर आपका धन्यवाद न किया जावे, तो बहुत नाशुकरी होगी। मैंने मक्का मुअज़्ज़मा जाते हुये आप के यहां से अमृतधारा मंगवायी, और बहुत सी अंग्रेजी, यूनानी दवाईयां भी साथ थीं। सब से पहिले जहाज में समुद्र के पानी के दो बार इस्तेमाल करने से तमाम फुंसियां निकलनी शुरू होगईं, जिन से बैठने में सख्त तकलीफ होती थी। एक साहिब ने फरमाया कि अमृतधारा का फोया भर कर चुपड़ लो। मैंने ऐसा ही किया, एक दफा में आराम हुआ। इसके पश्चात् फिर मदीना मुनव्वरा में एक रात दो बजे मेरी लड़की खालदा बेगम को कै होनी शुरू हुई, सुबह तक पांच दफा हुई। मैं हैरान थी कि क्या करूं, सुबह को अमृतधारा तीन बूंद पानी में पिलाई, फिर कै न हुई। बच्ची को प्यास बहुत थी। दो घण्टा के पश्चात् गुलाब के अर्क में तीन बूंद डालकर पिलाई, खुदा ने फज़ल किया, मुझ को इस पर यकीन होगया। जब नबी के गृह में गई, तो एक औरत सख्त व्याकुल थी उस का दो वर्ष का बच्चा आंखों की तकलीफ से बिलख रहा था, इस के आंखों के चारों ओर लगा दी। बच्चा उसी समय सोगया। हां अब तीन रोज हुए, तीन बजे रात को मेरी लड़की के आमाशय में दरद उठा, मैं सेंकते २ हैरान होगई। किसी तरह से दर्द थमता न था। आखिर मैंने अमृतधारा लेकर इस के मेदा पर मालिश की, और दो बूंद पिला दीं। थोड़ी देर में दरद थम गया, और फिर न उठा। मैंने और भी कई जगह इस का इस्तेमाल किया। खुदा के फजल से तीर ब हदफ पाया। बखौफ तवालत नहीं लिख सकती। यह चीज़ अजीबो-गरीब है"।

हमीदा बेगम सादमंज़ल देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमान् राजा साहिब राजा खुल्क सिंह साहिब जानकी भवन महल खनियाधाना से लिखते हैं: —"कविविनोद वैद्यभूषण श्री पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य जी ! आप की आविष्कृत अमृतधारा को मैंने सेवन किया, यह सर्व रोगों को दूर करता है, जैसा नाम वैसा ही गुण है, विशेष कर अचानक आई हुई बीमारियों के वास्ते तो रामवाण है, जहां तक इस की प्रशंसा कीजाय कम है, ईश्वरका धन्यवाद है, जिस की कृपा से यह आप को प्राप्त हुई है"।

एक डाक्टर साहब की राय।

"असल में अमृतधारा को अकसीर आज़म या आवेहयात कहना चाहिये। सच तो यह है कि मेरी जिह्वा में इतनी शक्ति कहां, कि इस की प्रशंसा कर सकूं, अद्वितीय है। कुछ दर्दों पर अकसीर है। हमारे यहां एक फीलवान का हाथ हाथी से गिर कर टूट गया था, मुझे खबर हुई, मैंने रुई में तर करके उस के हाथ को चारों ओर लपेट कर बांध दिया और दस २ मिनट पश्चात् बूंद २ टपकाते रहे। खुदा के फ़ज़ल से और आप की ईजाद कीहुई अमृतधारा से ३-४ दिन में तन्दुरुस्त होगया। हड्डी बिलकुल चूर होगई थी॥

(२) चन्द सप्ताह हुये, कि एक मनुष्य को सांप ने काट लिया, वह भी मेरे पास आया। हम ने नश्तर घाव पर देकर दो तीन बूंद से मालश करदी, और पताशा के अन्दर ६ बूंद डालकर पिला दी। खुदा के फ़ज़ल करम से वह भी अच्छा होगया। खुदा आप को इस का बदला देवे"

[डा० एम० एस० सैयद महबूब हुसैनखां बहादुर, सूरत]

स्कौटों, बाहर की डयूटी वाले अफसरों को पास रखनी चाहिये

मिस्टर आर के सिब्बू साहब डिवीज़नल आफीसर एस. डब्ल्यू. एस. कानपुर क्या लिखते हैं:—"अमृतधारा" सब Tropical Diseases (गरम मुल्कों में होने वाले रोगों) के लिये जो हिन्दुस्तान में होती हैं अकसीर है। मुझे यह सूचना देने में खुशी है, कि यह कभी नाकामयाब नहीं होती है। यह ईश्वर की दाद है। इस लिये हर एक जाति को इस की बरकत से लाभ उठाना चाहिये। वह लोग जिन को बाहर रहना पड़ता है, जैसा कि बारश-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्टरी या फौज या पुलीस विभाग, उन को एक शीशी सदा अपने पास रखनी चाहिये ताकि वह समय पर निर्धनों की सेवा कर सकें। यह उपकार का काम है, मैं अमृतधारा और इस के जादू भरे प्रभाव से पूरे तौर पर सन्तोषी हूं"।

खान बहादुर एम. इमाम उद्दीन साहिब डिप्टी कन्सरवेटर जङ्गलात सरमोर लिखते हैं:—"मैं अमृतधारा नामक दवाई पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की आविष्कार की हुई पांच ६ वर्ष से सेवन कर रहा हूं। मैंने शायद इस की १०० या अधिक शीशियां अपने घर में और बाहर और पहाड़ी आदमियों में प्रयोग की हैं। और मेरी सम्मति यह है, कि यह सब रोगों को दूर करती है। असंख्य पहाड़ी लोग इसके सेवन से जंगी बुखार के दिनों में नीरोग हुए। एक अद्भुत तजुरबा यह हुआ, कि यहां एक स्त्री की आंखें बिलकुल खराब होगई थीं दिखाई बिलकुल न देता था। मैंने अमृतधारा पीतल की सलाई से लगा दी और दो दिन में उस की आंखें साफ होगईं, उस को पीड़ा तो बहुत हुई, मगर आश्चर्यजनक तौर पर राज़ी होगई"।

विशेष सूचना।

अमृतधारा शब्द हमारा है, कोई दुकानदार अगर धोके से इस नाम से कोई और दवाई देते हों, तो कृपा करके इस की सूचना हम को दिया करें, कार्य्यालय अमृतधारा लाखों रुपया के विशाल भवन में स्थापित है। इस के लिये विशेष डाकखाना अमृतधारा डाकखाना के नाम से खुला हुआ है। साथही की सड़क का नाम अमृतधारा सड़क है। अमृतधारा भवन के एक भागका प्रवेश संस्कार सर प्रतूलचन्द्र चैटरजी चीफजज हाईकोर्ट पंजाब ने और दूसरे भागका एफ० डबल्यू० कन्ये साहिब डिप्टी कमिश्नर लाहौर ने किया था। लाहौर में आने वाले महाशय मैनेजर की आज्ञा से कार्य्यालय को देख सकते हैं।

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतधारा के तीन मिश्रण।

सुविधा के वास्ते निम्नलिखित तीन औषधियां अमृतधारा से तय्यार करके रखी जाती हैं।

(१) अमृतधारा साबुन।

इस साबुन में जो गुण हैं, वह किसी और में नहीं, यह साबुन चर्मज रोग दाद, चम्बल, फोड़ा, फुन्सी, खाज, पित्ती, कील, छाइयां आदि का दूर करता है, त्वचा को कोमल व सुन्दर बनाता है, और डिसइन्फ़ैक्टैण्ट भी है, रोगियों को देखने के पश्चात् इस से हाथ साफ करने से रोग कीटाणु नष्ट होते हैं, और रोग का भय नहीं होता। जनता ने इसे बहुत पसन्द किया है। मूल्य प्रति बक्स ३ टिकिया ॥I=) प्रति टिकिया I-)

(२) अमृतधारा मरहम।

बहुत से पुराने चर्मज रोगों के दूर करने वाली औषधियों को अपनी प्रसिद्ध अमृतधारा के साथ मिलाने से तैयार की गई है। अमृतधारा मरहम में कोई पाशविक चार्बी शामिल नहीं है, समस्त चर्म रोगों की अद्वितीय औषधि है। सब प्रकार के घाव, चोट रगड़, फुन्सी, दद्रु, चम्बल, एगज़ीमा खाज, छपाकी, छाले, हाथ पांव का फटना, उपदंश के घाव, अर्श मस्से, मच्छर भिड़ आदि के डंक, आग, उष्ण जल व तेज़ाब आदि से जलना सब इस से दूर होजाते हैं। बड़े से बड़े घाव इतनी जल्दी भरने शुरू होजाते हैं, कि बड़े बड़े डाक्टर चकित रहते हैं। मूल्य १) प्रति डिबिया।

(३) अमृतधारा लोज़ञ्जिज़

(अमृतधारा की मीठी टिकियां)

विलायत से पेपरमेण्टादि की मिष्ट टिकियां विक्रयार्थ भारतवर्ष में आती हैं, हम ने अमृतधारा की टिकियां तैयार की हैं, इन के चूसने से अमृतधारा का कुछ लाभ होने के साथ २ दन्त रोग, कफज रोग, कण्ठ खाज़, गले पड़ना, कासादि को लाभ होता है। बालकों को विदेशी टिकियां और गोलियां आदि खाने के बदले इन को अपने पास रखना चाहिये। मूल्य १०० टिकियां I) चार आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतधारा औषधालय की कुछ विचित्र औषधियां:-

जिन्हों ने संसार को आश्चर्य में डाल दिया है।

मीठा फल—यह एक विचित्र, संसार को अचम्भे में डालने वाली औषधि है। जब गर्भ होजावे तो दो मास के पश्चात् तीसरे मास ३ गोली दूध से खिलाई जाती हैं पुत्र ही उत्पन्न होता है। मूल्य १०) रु०

फूलो फलो—यह सूखिया मसान की विचित्र औषधि है, इस को केवल कटि पर मला जाता है, और वहां से महीन २ कृमि निकलते हैं, वही रोग का कारण होते हैं मूल्य १) रुपया।

तृतीयक ज्वर तन्त्र—इस औषधि को ज्वर चढ़ने से पहले उंगली पर बांध देने से ज्वर नहीं चढ़ता। मूल्य ॥)

दरद शिकन—इसकी एक ही पुड़िया के सेवन से चाहे किसी प्रकार की मांस व पट्ठों की पीड़ा हो, जाती रहती है। शिर पीड़ा, जोड़ों की पीड़ा, कटि पीड़ा, गुल्फ, रान या किसी जगह की पीड़ा हो, १५ मिनट में आराम। पुरानी पीड़ा हो तो कुछ दिन सेवन करनी चाहिये। मूल्य १) नमूना ।)

बला दूर (अफ़ीम निवारक)—इन गोलियों के खाने से अफीम छूट जाती है। सैंकड़ों मनुष्य इस से अफीम छोड़ चुके हैं। मूल्य ६० गोली १॥)

रोगन मसीहा—नाड़ीव्रण (नासूर) तथा भगन्दर को दूर करता है, इस के लगाने से प्रथम सब पीव निकल कर भीतर से व्रण भरना आरम्भ होता है, मूल्य १ औंस ३) ४ डराम १॥) नमूना १ डराम ।=)

ज्वरार्क—मलेरिया, जूड़ी या मौसमी ज्वर किसी प्रकार का हो तीन दिन के भीतर २ जाता रहता है। मूल्य ॥) शीशी।

अकसीर बदन—गले व छाती के रोग, कास, श्वास, गले पड़ना आदि के लिये हितकर है, जीर्णज्वर, राजयक्ष्मा की खांसी में, पीब या रक्त जाने को पूर्ण गुण करती है, मूल्य फी शीशी १॥)

अमृत गोलियां—कफज कास श्वास, पेट दर्द, शीत ज्वर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्रपीड़ा, नेत्ररोग, सब प्रकार का विष, ज्वर, सन्निपात, दन्तरोग, कोष्ठबद्धता, सर्पदंश, बिच्छूदंश, भिड़डङ्क, उदरकृमि, मूत्रबद्ध, आमाशय की निर्बलता, संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, सन्धिवात, उपदंश, मुख गन्ध, शिरपीड़ा, कामला, जलोदर, धातुक्षीणता, मृगी, नासूर, अतिसार, मरोड़, कर्णपीड़ा, दन्तपीड़ा, आर्तवबद्धता, गुदभ्रंश, शीतदोष नाभि पीड़ा, अश्मरी, क्लीब, प्रतिश्याय, मूत्रातिसार, बालकों का डब्बा रोग, इत्यादि ५० रोग दूर होते हैं । मूल्य ६० गोली १) नमूना =)

ज्वरारि अभ्रक—यह गोलियां विषम ज्वर के वास्ते अनुपम व अद्वितीय हैं। पुराना ज्वर, चढ़ता उतरता हो, प्रायः पहिले दिन छोड़ देता है। मूल्य १६ गोली १), ८ गोली ॥)

गन्धार रस—प्रायः एक ही मात्रा से अतिसार मरोड़ादि को आराम आता है, विशूचिका के वमन विरेचन को भी आराम होता है, अतिसार व मरोड़ के वास्ते ऐसी हितकर अन्य औषधि न होगी। मूल्य १) रुपया नमूना =)

दत्त नस्वार—इस से शिर वेदना, आधा शीशी, दाढ़ दर्द, कर्णपीड़ा, नेत्रपीड़ा, प्रतिश्यायादि दूर होते हैं, मृगी सन्निपात को हितकर है। मूल्य १) तोला, नमूना ।)

सूर्य्य घृत—इस को शरीर पर मलने से सब प्रकार की खाज तर व खुश्क दूर होती है, फोड़ा फुन्सी जिन को कई प्रकार के निकलते रहते हैं, उन के शरीर भी सर्वथा स्वच्छ होजाते हैं। मूल्य २ औंस १) नमूना ४ डराम ।)

एण्टी मेद—मोटापे की औषधि है, इस औषधि से प्रति मास ४-५ सेर और कभी १० सेर तक भार कम होसकता है। मूल्य फी शीशी खुराक एक मास ४), खुराक १५ दिन २)

प्राणदाता—यों तो अमृतधारा भी विशूचिका के वास्ते अमृत है तथापि ऐसे भयंकर रोग में सहायतार्थ अन्य औषधियां भी हमेशा तय्यार रखनी चाहियें, यह हमारी अनुभूत औषधि है, और ५ घण्टे के भीतर ही इस से प्रायः आराम आ जाता है, मूल्य १५ गोली १) रुपया।

औषधियां मिलने का पता—अमृतधारा लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अञ्जन, मञ्जन इत्यादि का वर्णन

अखण्ड—यह सुरमा दैनिक सेवन के वास्ते है, नेत्रों को प्रायः रोगों से सुरक्षित रखता है, दृष्टि स्थिर रखता है, और शीतलता प्रदान करता है। मूल्य १ तोला ॥) नमूना केवल -)

अखरौशन—नेत्र रोग यथा पानी आना, धुन्ध, नया फोला, जाला, कुकरे, पड़वाल आदि को दूर करता है। मूल्य १ तोला ॥।) नमूना -)॥

फोला क्योरा—यह सुरमा फोला के वास्ते विशेष रूप से हितकर है। धुन्ध, जाला, कुकरे आदि को भी बहुत शीघ्र दूर करता है। मूल्य ८) रुपये तोला, ६ माशा ४ नमूना १)

पड़वाला क्योरा—पड़वालों के लिए विशेष रूप से हितकर है। पड़वालों को उखाड़ २ कर लगाया जाता है, तो फिर नहीं उगते। मूल्य ४) रुपये तोला, ६ माशा २) नमूना ३ माशा १)

मंजन नं० १—दन्त रोगों यथा रक्तस्राव, पानी लगना, दन्त पीड़ा मुख दुर्गन्ध को हितकर है। दांतों को स्वच्छ करता है, मूल्य।) नमूना -)

मंजन नं० २—विशेष कर दांतों की सफाई के लिए बनाया गया है, इसके मलते रहने से दांत मोतियों के समान चमकने लगते हैं। जिनके टारटर (मल) जम गया हो, वह उसे उतार कर मलते रहें तो फिर न जमेगा। मूल्य ।) नमूना -)

मंजन नं० ३ (कारबोलिक मंजन)—यह मंजन अंग्रेजी प्रकार का है, रंग गुलाबी, कारबोलिक टूथ पोडर है, दन्त कृमि नाशक है, दांतों को स्वच्छ करता है, जो विलायती मंजन को पसंद करते हैं, वह इसको सेवन करें। मूल्य ।) नमूना -)

मंजन नं० ४—हिलते हुए दांतों के लिये विशेष रूप से, और जब कि मसूढ़े पृथक् होरहे हों, गुणकारी है मूल्य ॥) नमूना =)

चनमोल (दुर्गंध नाशक गंडूश)—जो दांतों की पूर्णतयः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षा करना चाहें, उन को भोजन के पश्चात् इस गण्डूश से मुख साफ करना चाहिये, मुख के भीतर रोगोत्पादक कृमि को तुरन्त मार देता है, दुर्गन्ध दूर करता है, मसूढ़ों को दृढ़ करता है, जिनके दांतों को कृमि लगने का भय हो अथवा लग गया हो, वह सेवन करें, तो आगामी सुरक्षित रहेंगे. मूल्य २) नमूना ॥)

कोकली स्वर (स्वर वर्द्धक)—वकीलों, वैरिस्टरों, लैक्चरारों, उपदेशकों, पण्डितों, रागियों, स्कूल मास्टरों आदिकों को जिनका बोलने का काम है, यह गोलियां रखनी चाहिये, यथावश्यक मुख में रखने से गला नहीं बैठता, बैठा हुआ जल्दी खुलता है, और कुछ दिन लगातार खाने से कण्ठ सुरीला हो जाता है। मूल्य २० गोली २), नमूना ।)

मुख रक्षक—मुख के छालों के वास्ते हितकारी है चाहे बालकों के हों, वा बड़ों को, मूल्य ॥), नमूना ।)

मसाहल पान—हमने देखा है, कि बाज़ारी पान विक्रेता प्रायः मलीन वर्तन आदि में सामग्री रखते हैं, इसलिये यह मसाला बनाया गया है, एक पान पर चुटकी रख दीजिये पान तय्यार है, वैसा ही रंग देगा, इस के अतिरिक्त मुख दुर्गन्ध को दूर करेगा, स्तम्भन करेगा, दांतोंको दृढ़ करेगा, कफादिको शुष्क करेगा मूल्य १) नमूना =)

गोली पान—वह लोग जो पान के बड़े २ पत्र मुख में डालने के बिना पान का आनन्द लेना चाहते हैं, वह मंगवावें शेष गुण "मसालह पान" के से हैं मूल्य ६० गोली १) नमूना =)

गला क्योरा—यह गोलियां कण्ठ व छाती के रोगों के वास्ते रसायन हैं, जिनको शीघ्र २ स्वर भेद हो जाता है, उनके वास्ते गुणकारी है, धांस, कण्ठ, खाज, मुख में छाले, लाल जिह्वा इत्यादि को लाभदायक है, मुख में रख कर २-३ गोली प्रतिदिन चूसना चाहिये. मूल्य ९६ गोली ॥)

शिला तैल—शरीर पर जो मोहके (मस्से) निकल आते हैं, कैसे बुरे मालूम होते हैं, वह इससे बिना कष्ट दूर होते हैं। मूल्य फी शीशी ४ डराम ४) नमूना १)

औषधियां मिलने का पता—अमृतधारा लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौन्दर्यवर्धक तैल पौडर इत्यादि का वर्णन।

बागफूल तैल—बालों के तैल जो आज कल तैयार होने लगे हैं, सुगन्धि के अतिरिक्त इन में कुछ भी नहीं होता, यह बालों के लिए बहुत गुणकारी है, उन को नरम व मुलायम करता है स्याही स्थिर रखता है बढ़ाता है, जड़ों को दृढ़ करता है, इस के अतिरिक्त मस्तिष्क को तर व ताज़ा रखता है नज़ला, जुकाम की अधिकता को दूर करता है, मूल्य १ शीशी १)

बाल उड़ाने की अनुपम औषधि—इस को पानी में घोल कर लगाने से एक मिनट के भीतर कठोर से कठोर और कोमल से कोमल स्थान के बाल जड़ से दूर होते हैं जिस २ ने मंगाया, प्रशंसा की है, मूल्य फी डिबिया ।=), नमूना -)॥

मुख रोन (मूछ बढ़ाने का तैल) यह तैल न केवल मूंछों को वरंच प्रत्येक स्थान के बालों को बढ़ाता है और उनको स्याह रखता है, अहा! रोबदार मूंछों वाला चेहरा कैसा भला मालूम होता है, मूल्य फी शीशी ३ औंस २), नमूना ।=)

चित्त मोहनी—इस उबटन को स्नान समय मलने से चेहरे के बुरे दाग, कील, छाइयां आदि दूर होकर चेहरा साफ होता है, झुरियां नहीं पड़तीं, चेहरे का रंग दिन प्रतिदिन निखरता जाता है, सूरत मनमोहनी होजाती है। मूल्य १) नमूना =)

दिल सुन्दरी—यह स्नान के पश्चात् सेवन किया जाता है, एक प्रकार का तैल है, जो चेहरे को चमकाता है और दाग कीलादि को दूर करता है, यदि स्नानसे पहले चित्तमोहनी और स्नान पश्चात् दिलसुन्दरी का सेवन हो तो बस कहना ही क्या है। मूल्य फी शीशी ॥|=), नमूना ।)

प्राण सुख—स्तनों को ढलकने से बचाता है, और ढलके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए को प्रकृति अवस्था पर लाता, और कठोर व उन्नति रहित, भद्दे स्तन स्त्री के लिए दुखदाई होजाते हैं। मूल्य ४), नमूना १)

पुरुषों के विशेष रोगों सम्बन्धी कुछ औषधियां।

पूर्ण सूची "नपुंसकत्व" नाम की पुस्तक मुफ्त मंगाने पर मिलेगी। इन औषधियों की प्रशंसा में सहस्रों प्रशंसा पत्र मौजूद हैं॥

अक्सीर नं० १—महत वाजीकरण औषधि—बहुत सी वीर्यवर्द्धक, उत्तेजक औषधियों का संग्रह है। नपुंसकता की सम्पूर्ण अवस्थाओं में हितकर है, यह पुरुषों के गुप्त रोगों के वास्ते जनरल औषधि है। शुक्रमेह शीघ्रपतन, स्वप्नदोष को बहुत लाभ दायक है। मूल्य ६४ गोली ४) ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥)

अक्सीर नं० २—लक्ष्मीविलास रस—वैद्यक में लिखा है, कि यह रस नारद जी ने श्रीकृष्ण जी महाराज को बताया था दूध के साथ नित्य खावे तो बूढ़ा भी युवा के तुल्य होवे: कामदेव के समान हो जावे, सन्निपात, प्रमेह, भगन्दर, कण्ठ शोथ, संग्रहणी, मरोड़, खांसी, जुकाम, बवासीर, सन्धिवात कटि पीड़ा, नेत्र पीड़ा, दृष्टिमान्द्य घ्राणदुर्गंध, गलगण्ड, शिर पीड़ा प्रदरादि को हितकर है। ज्वर या अन्य रोग के पश्चात् जो निर्बलता, नपुंसकता, प्रमेहादि, होता है। उसको विशेष रूप से हितकर है शुक्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, को लाभदायक है। मूल्य ६४ गोली ४)

अक्सीर नं० ११—हृदय मस्तिष्क, यकृत, आमाशय, मूत्राशय, को पुष्टिदायक है, आनन्द वर्द्धक है, सुस्ती, शीघ्रपतन. स्वप्नदोष, को हितकर है, याकूती का काम भी देती है, अमीरों के खाने योग्य प्रत्येक प्रकृतिके अनुकूल इसका प्रधानांग स्वर्ण है मूल्य ६४ गोली १०), १६ गोली २॥), नमूना ४ गोली ॥=)

अक्सीर नं० १२—विशेषतया शीघ्रपतन रोगियों के वास्ते है। तीसरे पहर एक दो गोली दूध से खाने से पूरा प्रभाव होता है, नित्य सायम् प्रातः एक गोली खाने से शीघ्रपतन का मूलच्छेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है इसके खाने वाले को खांसी, नजला, जुकाम, कटि पीड़ा, वातज, कफज आदि रोग नहीं सताते। मूल्य ६० गोली ३), २० गोली १), नमूना ५ गोली।)

अकसीर नं० १४—प्रमेह शीघ्रपतन तथा स्वप्नदोष नाशक है कुसमय की अधिक रतूवत बन्द होती है। मात्रा ९ माशा सायं प्रातः दूध के साथ दें। मूल्य ३० तोला का ३), १५ तोले का १॥) है॥

अकसीर नं० २० (मन्मथ रस)—वृद्ध को युवा और युवा को मल्ल बनाने के वास्ते यह योग शिवजी महाराज का निर्मित है, उत्तमता यह है कि तीव्र नहीं है। चिरस्थाई लाभ धीरे २ करता है। सदैव खाने में कोई हानि नहीं है। सुस्ती शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेह, को दूर करता है, खांसी, नजला, जुकाम, श्वास, पाण्डु, कामला, अपाचन को हितकर है। रक्त उत्पन्न करता है। पौष्टिक उत्तेजक व स्तम्भक है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० २४ सुखकारक—शीघ्रपतन रोगी का जब तक रोग दूर न हो कभी २ तीसरे प्रहर दूध के साथ खावें, पश्चात् कोई खट्टी लवणयुक्त वस्तु न खावें, चौगुणा असर होता है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली।)

अकसीर नं० २७—…पश्चात् एक दो गोलियां खा लीजिये उदासी दूर, सुस्ती चकनाचूर, बल ज्यों का त्यों, नित्य दूध के साथ सायम् प्रातः खावें, तो शीघ्रपतन को हितकर है। मूल्य ६० गोली १), नमूना =)

अकसीर नं० ३० धातुवर्धक—इस से वीर्य बहुत बढ़ता है, और पुष्ट होता है, शुक्रमेह, स्वप्नदोष और शीघ्रपतन को भी हितकर है मूल्य २) पाव, नमूना ५ तोला ॥)

अकसीर नं० ३१ चन्द्रप्रभा वटी—यह वैद्यक योग विविध नामों से बड़े २ वैद्य बेच रहे हैं, २० प्रकार के प्रमेह, पथरी, अफारा, शूल, मन्दाग्नि, अण्डवृद्धि, पाण्डु, कामला, बवासीर, भगन्दर, नासूर, कटिपीड़ा, कास, श्वास, हिक्का, डकार, नजलादि को हित-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर है। वीर्य्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है, मूल्य ३२ गोली १). नमूना ८ गोली ।)

अकसीर नं० ३३ आयुर्वेदिक टानिक—स्त्री पुरुष के रज वीर्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है,यह गोलियां पौष्टिक, बलवर्द्धक, सन्धिवात नाशक हैं और कटिपीड़ा, गुल्फ पीड़ा, पार्श्वशूल रींघनवायादि सर्व वातज कफज रोग मिटाती हैं। मूल्य ६४ गोली ४) ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० ३४ (क)—धातुस्राव के वास्ते यह अद्वितीय औषधि है, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन को भी शीघ्र दूर करती है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० ३९—शुक्रमेह शीघ्रपतन व स्राव को दूर करती है शारीरिक बल को अधिक करती है मस्तिष्क को लाभ पहुंचाती है। लेसदार औषधि होने पर भी काबिज नहीं है। इस के खाने से प्रकृति स्तम्भन बढ़ता है। मूल्य प्रति पाव २), आधा पाव १), नमूना १ छटांक ॥)

तिला नं० १—कुछ सुगन्धी युक्त है, बूढ़ों को विशेष रूप से लाभकारी है, जो शौकिया बल बढ़ाना चाहें यह तिला हितकर है, मूल्य ४ डराम ५), नमूना १ डराम १।),

तिला नं० ३—अपना आप गंवाने वालों को विशेष रूप से हितकर है साधारण अवस्था में बहुत गुण करता है। मूल्य १) रुपया नमूना ।)

तिला नं० ४—यह बड़ा भारी प्रचण्ड है चरम का एक परत उतार देता है, परन्तु नसों पट्ठों को बहुत शीघ्र ठीक करता है ध्वजभंग, नपुंसकता दूर करके पूरा बल प्रदान करता है, मूल्य ३), नमूना ॥।)

तिला नं० ६ (स्थूली करण)—स्थूलता के लिये है। मूल्य ४), आधी शीशी २), नमूना ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों व बालकों की कुछ औषधियां।

अबलाराम—हर प्रकार का प्रदर लाल, पीला, श्वेत इस से दूर होता है। कटि पीड़ा, सोम रोग आदि को भी हितकर है, मूल्य ३२ गोली २), नमूना ।)

पत्ताली—मासिक का कम होना, वा न आना, वेदना सहित आना और तत्सम्बन्धी सर्व रोगों को दूर करके गर्भाशय को गर्भ धारण योग्य बनाती हैं और बल प्रदान करती हैं। मू० २), नमूना ॥)

सोमावती—स्त्रियों को जो श्वेत पानी जाता है, चाहे किसी प्रकार का और किसी दर्जे का हो, इस से आराम आ जाता है, मूल्य २४ मात्रा २), नमूना ८ मात्रा ॥)

गर्भ चिन्तामणि रस—गर्भिणी के सर्व रोग, ज्वर, कास, अजीर्ण, शोथ, जी मचलाना, वमन, अतिसार, उदरशूल, शीतादि को लाभ करता है। गर्भिणी की कोई भी व्याधि हो इस से लाभ होता है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली ।)

रक्त स्तम्भक—जब रक्त ऋतुकाल के अतिरिक्त जारी हो तो तीन दिन के सेवन से बन्द होगा, मात्रा ६ दिनकी २), ३ दिनकी ॥।)

गोदभरी—जब कि पुरुष का वीर्य ठीक हो यह गोली स्त्री को खिलाई जाती है, प्रथम तो प्रथम ही मास, अन्यथा चौथे मास के भीतर ईश्वर की कृपा से गर्भ स्थित होजाता है, मूल्य ५)

अबला सुख—यह औषधि स्त्रियों के अनेक रोगों को गुणकारी है, जो स्त्रियां निर्बल हों, दिनों दिन रोगी रहें, यह दवाई गुण करती है। मूल्य ४० गोली ३), नमूना १० गोली ॥।),

अबलानन्द—इस के भी उपर्युक्त गुण हैं और पित्त प्रकृति वाली स्त्रियों के लिए है। मूल्य ४० खुराक ३), नमूना ॥।)

मन रंजन (हिस्ट्रिया की दवाई)—स्त्रियों के इस रोग की अनुभूत औषधि है मूल्य ६४ गोली ४), नमूना १६ गोली १)

ब्रह्मपुत्र रस (अठरा की औषधि)—अठरा से जो सन्तान छोटी अवस्था में मर जाती है उसकी दवाई। मू० १०० गोली १०)

औषधियां मिलने का पता—अमृतधारा लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखजनाई—इस औषधि को केवल कटि पर बांधने से बालक सुगमता से उत्पन्न होता है। मूल्य १)

गर्भ प्रतिबन्धक—जब कभी गर्भावस्था में स्त्री के प्राणों का भय हो, तो ऐसे यत्न की आवश्यकता पड़ती है कि गर्भ न ठहरे। मू० २)

बालसुख—यह बालकों के वास्ते टानिक औषधि है। मन्दाग्नि कोष्ठबद्धता, हरे पीले दस्तों का आना, ज्वर, तृषा, कृषता, बालक का सूखते जाना और सदैव रुग्ण रहना, पित्ताधिकता सब दूर होते हैं, मूल्य ६४ गोली १), नमूना ८ गोली ≈)

काकड़सत—बालकों को प्रायः होने वाले रोग, तथा अजीर्ण अतिसार, ज्वर खांसी आदि को हितकर है। प्रत्येक बालकों वाले गृह में होना चाहिए। मूल्य ॥), नमूना ≈)

दूधजा—दूध सुखाने की दवाई मूल्य २) नमूना ॥)

दुधला—दूध बढ़ाने की दवाई। मूल्य ७ तोला १)

मान—विषय वासना को दूर करने वाली है मूल्य २)

पसलीनी—बालकों के डब्बा अर्थात् पसली रोग के वास्ते यह औषधि अति गुणकारी है। मूल्य ३२ गोली ४), नमूना १)

सरसोब—इस औषधि को गले में बांधा जाता है, बच्चों के दांत आसानी से निकलते हैं। मूल्य १)

मुश्कबेद—मृगी रोग प्रायः बालकों को हो जाता है, बड़ा दुष्ट रोग है, ईश्वर इससे रक्षा करे, इस औषधि से प्रायः १४ दिन में आराम आता है। मूल्य १४ गोली २)

बाल-विरेचन—बालकों को सहल और सुगमता से दस्त होता है। मूल्य ६४ गोली १), नमूना ८ गोली ≈)

काली दूर—यह औषधि काली खांसी के लिए परीक्षित है। मूल्य १६ गोली ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयानक रोग आतशक व सोज़ाक

उसके दर्जे, और उस पर जो औषधियां देशोपकारक औषधालय में बर्ती जाती हैं, उन में से कुछ लिखते हैं :—

आतशक–उपदंश कठिन रोग है। यदि लापरवाही की जाय, तो पीढ़ियों तक पीछा नहीं छोड़ता। उपदंश नर तथा मादीन के भेद से दो प्रकार का होता है। नर उपदंश में गहरे घाव केवल लिंग पर होते हैं, मादीन आतशक का विष रक्त में प्रविष्ट हो जाता है और शरीर पर फूट पड़ता है। इसका पहला घाव साधारण होता है, इसके तीन दर्जे होते हैं। पहिले दरजे में घाव केवल जननेंद्रिय पर होता है। दूसरे में शरीर पर काले दाग, ताम्र रंग की फुंसियां और छोटे २ घाव आदि निकलते हैं। तीसरे दरजे में हड्डी तक प्रभाव चला जाता है। बड़े २ घाव कुष्टवत होते हैं। आतशक के वास्ते कई औषधियां तैयार रहती हैं साधारण रूप से यह हैं। अपनी अवस्थानुसार मंगवा लें, या सब वृत्तान्त १) फीस के साथ आने पर हम स्वयम् निश्चित् करते हैं।

उपदंशौषधि नं० १३–उपदंश नर तथा मादीन को १४ दिन में आराम करती है। अव्वल दरजे में अकसीर है। दूसरे दरजे में भी गुणकारी है। मूल्य ४) आधी २)

उपदंशौषधि नं० १४–इस से वीस या अधिक से मिलाकर ४० दिन के भीतर आराम आता है, दर्जा अव्वल में अद्वितीय है। मूल्य ४० गोली ४)

उपदंशौषधि नं० १६–(उपदंश विरेचन)–जब कि रोग जीर्ण होचुका हो, या ऐसा दुःसाध्य हो, कि आराम न आता हो, तो पहिले जुलाव लेना उचित होता है। जब असूज, कार्तिक, या चैत्र फाल्गुण में उपदंश के फूटने का भय हो, तो ऋतु के आरंभ में यह विरेचन ले लें मूल्य ६ माशा १)

उपदंशौषधि नं० १७–यह औषधि द्वितीय तृतीय दर्जा उपदंश दुःसाध्य जीर्णोपदंश के घाव, फोड़ा, फुंसी, व्रणादि, को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हितकर है तालू छिद्र को भी गुणकारी है। नासूर को दूर करती है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २)

सारसारिष्ट मिश्रित—बहुत सी वैद्यक औषधियों का संग्रह है। उपदंश द्वितीय, तृतीय, दर्जे में हितकर है। फोड़ा फुंसी, दाग चम्बल दाद कृष्णदाग ताम्र वर्ण धप्पड़ खुजली आदि वा अन्य किसी भी रक्त दोष को दूर करके शरीर को कुन्दनवत करता है। मूल्य ३ औंस २), नमूना ।≈)

सोज़ाक—सोज़ाक में पहिले जलन व पीड़ा होती है, नितांत कष्ट होता है, दूसरे दर्जे में पीव आना आरम्भ होती है, कुरह हो जाता है, जलन धीरे २ बंद हो जाती है। और केवल पीव जाती है वा तार से निकलते हैं, इस से भी बढ़ जावे तो, तीसरे दर्जे में मुत्रावरोध हो जाता है मूत्र की नाली संकीर्ण हो जाती है, कभी २ मूत्र रुक जाता है, तीसरे दर्जे में पहुंचा हुआ सोज़ाक बड़ी मुश्किल से दूर हो सकता है, और जीर्ण हो जावे तो जाता ही नहीं, सोज़ाक के वास्ते भी बहुत सी औषधियां तैयार रहती हैं, अवस्थानुसार दी जाती हैं, साधारणतः यह हैं:—

औषधि सोज़ाक नं० १—(सोज़ोशौफ)—प्रथम दर्जे में रामवाण का काम देती हैं २४ घंटे के भीतर जलन दूर होती है, कष्टकम होता है, थोड़े दिनोंमें पूर्णलाभ होता है मू. ४ ड्राम १) न० ।)

औषधि सोज़ाक नं० २—(चिनाक)—बड़े ही अनुभवों के पश्चात् हमारा स्वयम् निर्माणकृत यह योग अकसीर सोज़ाक व कुरह है जो कि सोज़ाक की प्रत्येक अवस्था में गुणकारी है, दाह भी हो, पीव हो, या दोनों मिलेहुए हों, सब को अकसीर है, शुक्रमेहादि को हितकर है, मूल्य ६० गोली ४) नमूना १५ गोली १)

औषधि सोज़ाक नं० ३—यह औषधि केवल कुरह अर्थात् पीव जाने पर दीजाती है, एक ही दिन के भीतर पीव बन्द होनी आरम्भ होती है, इसके अतिरिक्त उपदंश को हितकर है, मू० २), न० ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्श, प्लीहा, हृदय, यकृत, उदर आदि की औषधियां ।

यूं तो अर्श ववासीर ६ प्रकार की होती है, परन्तु बड़े दो ही भेद हैं, रक्तार्श व वातार्श, कभी पैतृक भी होती है, जो कष्टसाध्य है, प्रसिद्ध औषधियां लिखी जाती हैं।

अर्शौषधि नं० ३—यह खूनी व वादी दोनों को हितकर है। मूल्य ४० गोली २), नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ७—यह विशेषकर रक्तार्शको लाभदायक है, मू० ४० गोली २), नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ९—यह औषधि बलवर्द्धक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि को भी लाभदायक है, विशेषकर रक्तार्श के लिए उपयोगी है। मूल्य ३० गोली ५), ६ गोली १)

अर्शौषधि नं० १०—ववासीर खूनी वादी को विशेष कर जब कि कोष्ठवद्धता साथ रहती हो, अद्वितीय है। मूल्य २), न. ।)

प्लीहा—मलेरिया ज्वर अधिक देर रहने से तिल्ली बढ़ जाती है, ज्वर हट जाने पर भी तिल्ली बनी रहती है कभी उदर की अन्य खराबियों से तिल्ली बढ़ती है। निम्नलिखित औषधियां प्रायः देते हैं।

प्लीहोदरौषधि नं० २—यह औषधि उस समय दी जाती है, जबकि आमाशय निर्बल हो, तिल्ली साधारणतः बड़ी हो मू०२)न०।)

प्लीहोदरौषधि नं०३—पौष्टिक है चेहरे को शीघ्र लाल करती है, बल को बढ़ाती है, अग्नि संदीपन है, मलेरिया के पुराने कीटाणु दूर होते हैं सब प्रकार की तिल्ली दूर होती है, मात्रा २ रत्ती। मूल्य ६ माशा ४) रु० १॥ मा० १ रुपया

प्लीहोदरौषधि नं० ५—प्लीहा के साथ कोष्ठवद्धता हो या तिल्ली बहुत ही पुरानी हो तो यह औषधि गुणदायक है, दूसरी किसी भी औषधि के खाते समय इस औषधि को जारी रक्खा जा सकता है मूल्य ६० गोली १), नमूना ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्लीहोदरौषधि नं० ६—उस दशा में विशेष रूप से हितकर है, जब कि ज्वर भी साथ हो या कभी २ हो जाता हो। यकृत विकार को भी लाभ करती है। मूल्य १) नमूना ।)

हयात अफ़ज़ा—हृदय की निर्बलता और धड़कन के वास्ते अनुपम औषधि है। मास में आराम आता है। मू० २), नमूना ।=)

हृदार्णवरस—हृदय की निर्बलता, धड़कन, हृदय के मेद को हितकर है। मू० १६ गोली २)

मंडूर वटिका—यरक़ान पांडुरोग यकृत निर्बलता इत्यादि के लिए अक्सीर है। मूल्य १६ गोली १)

शक्रारि—मधुमेह, जिसमें शक्कर आती है विशेष कर उसके लिए हितकर है। मू० ४), नमूना १)

लाल जवाहर—उदर पीड़ा, गुड़गुड़ाहट, वमन, विषूचिका अतिसारादि रोगों को हितकर है, पाचन शक्ति खूब बढ़ती है। मू० २), आधी शीशी १), नमूना ।)

दीपाचन—पाचन के लिए अक्सीर है। कफ़ व वादी को दूर करने वाली, भोजन को पचाने वाली, भूख को बढ़ाने वाली, उदरशूल, अफारा, वमन इत्यादि को दूर करने वाली है। मूल्य ॥)

एलवासा—शूल, पेट की वादी, गुड़गुड़ाहट, अफारादि को हितकर, क्षुधावर्द्धक है, कोष्ठबद्धता दूर करता है। मू० १), न० =)

दत्तविरेचन—यह गोलियां जुलाब के लिए अनुपम हैं, एक गोली रात को सोते समय खाने से प्रातः खुल कर १—२ शौच हो जाते हैं। मूल्य ६४ गोली १) रुपया, नमूना =)

आराम जान—इससे विरेचन नहीं होता, केवल शौच खुल कर आता है, और प्रतिदिन खाने से अंत्रियों का बल बढ़कर सतत कोष्ठबद्धता दूर हो जाती है। मू० ३२ गोली १), १६ गोली ॥)

औषधियां मिलने का पता—अमृतधारा लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य, रचित सर्व साधारण के उपयोगी स्वास्थ्य सम्बन्धी पुस्तकें ॥

काम व रतिशास्त्र (प्रथमभाग)– इस के भीतर २४५ हस्त लिखित चित्र और ५० फोटो के चित्र हैं। यह पुस्तक स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध पर लिखी गई है। मू० ६), उर्दू ५)

क्या हम लड़का लड़की अपनी इच्छानुसार उत्पन्न कर सकते हैं?–इच्छानुसार सन्तानोत्पत्ति करने के विषय में आजतक की वैद्यक यूनानी, डाक्टरी, कुल अनुसन्धानों का पृथक २ वर्णन है मू० ।)॥, उर्दू =)॥

घर का वैद्य–घरों में बूढ़े, जवान अथवा बालक स्त्री पुरुषों को होने वाले सम्पूर्ण छोटे बड़े रोगों और अचानक होने वाली घटनाओं के लिए प्रयोग बता देती है। मू० ।)॥ उर्दू =)॥

क्या मैं स्वस्थ हूं—आज तक हिन्दी भाषा में कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी गई। मर्द, औरत, बच्चा, बूढ़ा, जवान, तन्दुरुस्त बीमार हर एक को ऐसी पुस्तक के नियमों को जानना चाहिए। मूल्य ॥।), उर्दू ॥)॥

मीठी निद्रा–जीवन का तृतीयांश से अधिक निद्रा में व्यय होता है पढ़ो और आयुको बढ़ाओ मू० १।) उर्दू ॥।)॥

स्वास्थ्य रक्षा के दस नियमों का वर्णन–यह एक अंग्रेज़ी पुस्तक का अनुवाद है साधारण नियमों के पालन से स्वास्थ्य प्राप्त होता है और बुढ़ापे में भी जवानी का आनन्द आ सकता है। मूल्य ॥।), उर्दू ।≡)॥

ऋतु चर्या—इसमें ६ ऋतुओं का सविस्तर वर्णन, इनका मनुष्यों पर प्रभाव, ऋतु अनुसार रोगादि का वर्णन और इलाज रहन सहन खाने पीने, पहिनने के नियम उत्तमता से वर्णन किए हैं, मूल्य १।), उर्दू ॥।)॥

पुस्तकें मिलने का पता:—अमृतधारा लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन और स्वास्थ्य—भोजन सम्बन्धी अज्ञान के कारण वर्णन हैं मूल्य १।) उर्दू ।।।)॥

दूध और दूध की वस्तुएं—इस में दूध और दूध से बनने वाली तमाम वस्तुओं का वर्ण है । मूल्य १॥) उर्दू १।)

मेरे डाक्टर चचा ने मुझे गृहस्थ की शिक्षा कैसे दी—एक बालक को उस के डाक्टर चचा ने गृहस्थ के कार्यों की शिक्षा बहुत ही उत्तम प्रकार से दी है । मूल्य ।) उर्दू ≈)॥

वीर्य्य—इस में वीर्य्य के सम्बन्ध में पूरा ज्ञान, स्त्री व पुरुष की जननेन्द्रियों का आवश्यक वर्णन और स्त्री के वीर्य्य सम्बन्धी पूर्ण व्याख्या है मूल्य ॥≈) उर्दू ।=)॥

हर्ड़—हरड़ की सम्पूर्ण व्याख्या और सेवनविधि दरज है मूल्य ।) उर्दू –)॥

ब्राह्मी—इस में ब्राह्मी का पूरा वर्णन करके सेवन करने के कई उपाय लिखे गए हैं मूल्य –) उर्दू)॥

शीघ्रपतन—सविस्तार चिकित्सा और सर्व प्रकार के योग भी दिये गये हैं मूल्य ।=)॥ उर्दू ।–)॥

मलेरिया ज्वर का वर्णन—मलेरिया के विषय में आज तक का अनुसन्धान, रोग लगने की विधि, उसके कारण, लक्षण दिए हैं मूल्य ॥≈) उर्दू ।–)॥

स्थानाभाव के कारण पुस्तकों के नाम व कीमतें लिखते हैं:—

डाक्टर लुई कोहनी के चार स्नान =)॥, भारतवासियों की शारीरिक निर्बलता ।।।)॥, प्लेग प्रतिबन्धक ॥=), प्रसूतकाल ॥=) शिशुपालन १), रस हृदय तन्त्र ।।।), कोष्ठबद्धता ।।।), सोज़ाक ॥।), हिस्ट्रिया ॥), दोषज्ञान ।।।), शीतला १), इन्फ्ल्यूएञ्ज़ा ॥), विष चिकित्सा प्रथम भाग ।≡), विष चिकित्सा द्वितीय भाग १।=), प्रदर रोग ।–), गुप्तप्रकाश २॥)

पुस्तकें मिलने का पता:—अमृतधारा लाहौर ।

१०००० –७–२७

DIGITIZED C-DAC 2006
08 AUG 2006
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VERIFIED

PARTICULARS FROM:—AMRITDHARA, LAHORE

Entered in Database
DIGITIZED C-DAC
2005-2006
08 AUG 2006
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५५.१
10

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विषय संख्या .... आगत नं० 161994
लेखक वैद्य शर्मा ठाकुर दत्त
शीर्षक जर्मन डाक्टर लुई कोह्नी

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DIGITIZED C-DAC
2005-2006

08 AUG 2006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar